1906

(53) स्त्रियों को देखना, चुना उनके लावण्य में सुनना, विलास आदि सब बन्धन है छोड़ दो।

(54) शुद्ध सात्विक दर्शन बुद्धि और सत्संग द्वारा है मार्ग में चलते समय मार्ग निर्लोकित अरुणो दृष्टि रखना, व्यर्थ दूसरे पदार्थ न देखना। अश्लील दृश्य एवं चित्र एवं स्त्री पुरुषों को घूर कर न देखना।

(55) दम — इन्द्रियों में पड़ी बुरी आदतों से मन को बचाना।

(56) तितिक्षा — दुख के समय क्षमा, सहनशीलता रखना

(57) उपरति — मृत्यु और परलोक का ख्याल रखना नित्य सोचना देह, सम्पत्ति गृहस्थी सब अनित्य हैं।

(58) द्वन्द्व सहिष्णुता — सुख-दुख, मान अपमान, निंदा स्तुति में चित्त को अविचलित रखना।

(59) दान — जो बिना पढ़े एवं अपनी वस्तुओं का दान

(60) साधन — गुप्त रखना, चुपचाप करना।

(61) प्रभु के नाम से निरन्तर उनकी कृपा से प्राप्त होगी

(62) उनकी बेंच पर महापुरुष सब आगे बिराजे हैं कुली और मजदूर के वेश में घूमते हैं।

(63) दर्शन की वस्तुओं को सदा वस्त्रों की तरह भीतर में रखना, उदार एवं सावधानी पूर्वक, वस्त्र में रहती नहीं।

(64) कम से कम बोलो।

(65) रघुकुल नाम का जप करो निर्दिष्ट समय पर फल अवश्य मिलेगा।

(66) जिस वस्तु को रहे बिना जितना ही क्लेश होगा उसकी प्राप्ति से उतना ही आनंद होगा।

(67) रात को भोजन के बाद 3/4 घंटे सो लो फिर गहरी रात में उठकर नाम जप करो।

(68) हिंसा न करो, पराई निंदा न करो, व्यर्थ समय मत गंवाओ, सदा साधन भजन में लगे रहना और जो वस्तु प्रभु को अर्पित न की गई हो उसे मत खाओ।

(69) संतों के लिये खाना पीना और सोना यही तीन काम होते हैं अधिक नहीं। बचा हुआ सारा ही समय राम-भजन में बीतता है।

(70) शरीर के लिये भोजन उतना आवश्यक नहीं है जितनी प्रार्थना आत्मा की शान्ति के लिये है। ईश्वर की सत्ता को स्वीकार कर लेने के बाद प्रार्थना किये बिना रहा नहीं जायगा। ईश्वर नहीं चाहता

1908

कि हम प्रतिदिन अपनी सरकार को उस के सामने हवाला दें किंतु हमारे लिये ऐसा करना आवश्यक है। — गांधीजी

(71) श्रद्धा बुद्धि से परे है।

(72) ईश्वर वो नहीं है जो हृदय का स्वामी बन सके उसे हिला सके।

(73) जो शक्ति जीवसृष्टि को नियमबद्ध रखती है वही ईश्वर है।

(74) तार्किक युक्तियों का आश्रय छोड़ एक बच्चे की भांति ईश्वर से निश्चल विश्वास करें यदि ऐसा अहित नहीं है तो ईश्वर का अस्तित्व अनहम है

(75) सूर्य पृथ्वी से नौ करोड़ अट्ठाइस लाख तीस हजार मील दूर है।

(76) सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग्भवेत्॥

(77) दुःख सहे बिना और प्रतिकूल परिस्थिति का सामना किये बिना वास्तविक सुख नहीं मिलता।

(78) प्राणीमात्र कर्म करने में स्वतंत्र किन्तु फल भोगने में परतंत्र हैं कि ये हुए कर्म का फल भोगे बिना छुटकारा नहीं हो सकता।

(79) परमात्मा के मानसिक नाम-जप और शरीर का परस्पर घर्षण होने से कुण्डली अग्नि का साक्षात्कार हो जाता है।

(80) एक वर्ष तक नित्य बारह हजार ॐ का जप करने से ब्रह्म का साक्षात्कार हो जाता है

(81) (1) गंगाजी (2) प्रभु लीलाओं की कथा (3) साधु संग - ये तीनों ही जीवों को तारने के लिए हैं

(82) प्रभु सब के घट-घट में व्याप्त हुए हैं अतः किसी की निंदा मत करो।

(83) बुद्धिमान वही है जो पहले कर्म का फल विचार कर पीछे कर्म करता है।

(84) जो ईश्वर को देखता है वह कुछ कह नहीं सकता।

(85) प्रभु के भक्तों के दर्शन करो वही ईश्वर का रूप है

(86) जीवाभिमान ही प्रभु का आहार है।

(87) प्रभु को भक्त इतने प्यारे हैं कि संकल्प मात्र से सब कुछ करने को समर्थ होते हुए भी प्रभु अपने भक्त के प्रेमवश स्वयं प्रगटते हैं

(88) प्रभु बिना कारण ही सब पर दया करता है, प्रत्युपकार की बिना ही न्याय करता है, सबको समान समझ

1918

कर सबसे प्रेम करता है।

(४९) प्रभु में विश्वास रख कर सकने पर मनुष्य उसकी प्राकृतिक शीलताओं पर जाने के कारण क्रमशः प्रभु के निकट चला होता जाता है।

(५०) कर्मों की प्रकृति एवं मात्रा के अनुसार उनके फल का निर्धारण होता है।

(५१) भली भाँति प्रभु को पुकारने पर उनका उत्तर अवश्य मिलता है।

(५२) प्रभु जिसे देना चाहता है उससे साधु कर्म, जिसे गिराना चाहता है उससे असाधु कर्म कराते।

(५३) जहाँ कोई नहीं होता वहाँ प्रभु स्वयं करते हैं पर जहाँ अन्य कोई होता है वहाँ भक्तों के द्वारा सेवा कराते हैं — अर्थात् ईश्वर ही सेवा का योग प्रदान करते हैं।

(५४) जिस समय, जिस जगह दृढ़ विश्वास द्वारा प्रभु को पुकारो, उसी समय वहीं पर वे प्रकट होते हैं।

(95) हर समय प्रभु को स्मरण रखो, उसको आवश्यकता के समय जिसको बुलाते हो अभाव के समय धन्यवाद दो। प्रेम में अपने को उसके अर्पित दुःख सुख को भूल जाओ।

(96) पहले विश्वास फिर भला सुनाम लेन क्या करें

(97) इच्छा की दासता ही जग की दासता है।

(98) नम्रता, प्रेम, विश्वास, प्रार्थना, सहनशीलता और आत्मसमर्पण - हृदय की पवित्रता है

(99) तेरी विवशता ईश्वर-सत्ता का प्रमाण है। जो तुम्हारे संकल्पों के विरुद्ध कर रहा है वही ईश्वर है। विवशता के समय जिसकी और तुम्हारा हृदय जाता है वही ईश्वर है।

(100) ईश्वर की सत्ता का प्रकाश उसके भक्त और उनके हृदय हैं, वहां से वह स्वरूप से दर्शन देता है।

(101) प्रभो! मैं तेरे दर्शन के योग्य नहीं हूँ परन्तु मेरी उत्सुकता और प्रतीक्षा की ओर देख

(102) संसार के कष्ट और दुःख का अनुभव ईश्वर को जानने के लिये विवश करता है।

1912

(103) मन की कैसी भी अवस्था हो, कुछ देर तक एकान्त बैठकर मन को प्रभु-चरणों में लगाने से मधुर शान्ति मिलती है।

(104) ईश्वर दीन-दुखियों की सुनता है रक्षा करता है। ऐसे कठिन समय में उनकी रक्षा करता है जब रक्षा का कोई उपाय नहीं रहता।

(105) विश्वास रूप हर, श्रद्धा रूप भवानी और प्रेम रूप श्री हरि है।

(106) प्राण (श्वास) तो प्रत्येक जीव के शरीर से प्रत्यक्ष निकलते रहते हैं लेकिन दूसरे का शरीर निकलता नहीं देखा जाता। अतः प्राण आत्मा नहीं हो सकता।

(107) हमारी आत्मा जब भगवान का संग चाहती है उससे सहायता, पथ निर्देश, प्रेम बल प्राप्त करने चलती है तब प्रभु हमें मिलते हैं एवं इच्छा पूरी करते हैं।

देनहार कोउ और है, भेजत जो दिन रैन।

(108) जीवन है कि सुखों के लिये नहीं बल्कि मन की पवित्रता, प्रसन्नता और कृतज्ञता के लिये ही तथा प्रभु की करुणा एवं प्रेम पाने के लिये ही है। प्रभु की प्रार्थना, निरंतर प्रभु-नाम का जप, एवं प्रभु के गुणों एवं लीलाओं का सुमिरन चिंतन स्मरण करना चाहिये। भगवान कहते हैं "यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि"

(109) ईश्वर-विश्वास प्रकाश है और अविश्वास अंधकार है। विश्वास ईश्वर प्राप्ति की पहली सीढ़ी है। श्रद्धा ईश्वर प्राप्ति के समस्त साधनों पर भारी पड़ती है।

(110) मनुष्य की शक्तियां सीमित हैं अतः वह जो भी सोचता है करता है उसमें अपूर्णता रह ही जाती है।

(111) धन जीवन-निर्वाह का एक साधन है, न कि मनुष्य जीवन का साध्य।

(112) अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्॥

राम न जाते हरिन संग, सीय न रावन साथ।
जो रहीम भावी कबहुं होति आपुने हाथ॥

१९८३

(११३) प्रभु का दास होना स्वतंत्रता की परकाष्ठा है क्योंकि फिर हम इन्द्रियों की दासता, जग के प्रपंचों की दासता से सदा के लिये मुक्त हो जाते हैं। आने वाले भय एवं विपदाओं की आशंका नहीं रहती।
(११४) हम से जो बने दुखियों की सेवा कर दें बाकी के लिये परेशान न हों। हमारी बिसात ही क्या है कि दुनिया का दुख दूर कर सकें।
(११५) हमारा दुख तो प्रभु की महती कृपा ही है इसके द्वारा प्रभु हमें विशेष रूप से अपनी ओर खींचना चाहते हैं।
(११६) जो जगदीस तो अति भलो,
जो महीस तो भाग।
तुलसी चाहत जनम भरि
राम चरन अनुराग।।
(११७) श्रीराम ही समस्त जीवों के बन्ध-मोक्ष का अधिकार रखते हैं। माया के प्रेरक हैं सब सेवक हैं। वही जग के रचयिता, पालक और नाशकर्ता हैं।

वही सब के नियंता हैं, उन्हीं की इच्छा से सब कुछ होता है। उनकी कृपा से सारे अनिष्ट भी इष्ट (शुभ) बन जाते हैं। एक बार उनकी दया जिस पर हो गयी वह फिर प्रभु का कोप-भाजन ~~नहीं~~ बनता ही नहीं। कोई कैसा भी दीन दुखी हो उनकी शरण जाने पर तुरन्त अपनाते हैं। ईश्वर के ही भजन से कल्याण होता है। भजन विश्वास करके इससे हटा न लगाने से उनकी कृपा प्रारम्भ हो जाती है और उसके द्वारा भगवत्प्रभुता का बोध होने लगता है। नित्य निर्विशेष स्वरूप श्री राम जी पर दृढ़ रह भी भजन करना चाहिये।

(118) फल पक कर जब टपकता है, तो अधिक मीठा होता है।

(119) कहते हैं फल जब कच्चे रहते हैं तब खट्टे, फीके और कसैले होते हैं किंतु जब उन्हीं कच्चे फलों को रख दिया जाता है तो समय पाकर स्वतः पकने लगते हैं और पकने पर मीठे हो जाते हैं अतः जवानी का तीतापन क्रोध आदि वृद्धि

1915

अवस्था में छोड़कर अपने अंदर मधुरता ले आनी चाहिये।

(120) दर्शन का विषय ईश्वर, अर्थात् ईश्वर-स्वरूप से बहुत ही नीचे उतरा हुआ होता है।

(121) विषयी पुरुषों की दृष्टि में जो अशुभ घटनाएँ हैं, वे ही परमात्मा की प्राप्ति के मार्ग में ईश्वर-इच्छा का एक प्रकार का प्रकाश है जो साधक के यथार्थ कल्याण के लिये ही संघटित होती है।

(122) कटु वचन से आहत होकर मनुष्य रात दिन दुःखी रहता है अतः किसी के प्रति कटु वचन मत कहो।

(123) सब के प्रति दया, प्रेम का व्यवहार, दान और मृदु भाषण वश में करने के लिये अचूक हैं।

प्रेम को चुना-मसाला या जोड़ने वाला द्राविक पदार्थ समझना चाहिये।

2/5/84 **कल्याण के मत्स्य पुराणांक से उद्धृत**

(128) **महाप्रलय** :- सौ वर्ष तक वर्षा नहीं होगी। अकाल पड़ेगा- भयंकर गर्मी से सारी पृथ्वी जल कर राख की ढेर हो जायगी, देवताओं और नक्षत्रों सहित सारा जगत नष्ट हो जायगा। घोर वृष्टि होगी- सातों समुद्र एक मेक हो जायेंगे तीनों लोक एकार्णव (एक जलमय) हो जायेंगे (अध्याय-2) इस महाप्रलय के अवसान के बाद एक हजार वर्ष बाद एक सोने चांदी का अंडा होगा उसमें से सर्वप्रथम "आदित्य" (सूर्य)

(ब्रह्मा) प्रकट होंगे और उस अंडे को दो भागों में विभक्त कर स्वर्ग लोक एवं भूतल की रचना करेंगे तथा इन दोनों के मध्य में दिशाओं और आकाश का निर्माण होगा- उस अंडे से पर्वत, मेघ, समुद्र, नदियां आदि उत्पन्न होंगी। (अध्याय 2)

Ref (एक) *श्री मद् भागवत स्कन्ध 3 अ. 12 श्लो 22

ब्रह्मा के दस मानस पुत्र* -(1) मरीचि (2) अत्रि (3) अंगिरा (4) पुलस्त्य (5) पुलह (6) क्रतु (7) प्रचेता।

1916

(8) वसिष्ठजी (9) भृगु (10) नारद – मैं महर्षि

(ग) ब्रह्मा के शरीर से उत्पन्न मानस-हीन देव सन्तान – (1) दक्ष प्रजापति (2) धर्म (3) काम-देव (4) क्रोध (5) लोभ (6) मोह (7) मद (8) प्रमोद (9) मृत्यु (10) अंगजा (कन्या)

(घ) सृष्टि – सृष्टि करने की इच्छा से ब्रह्मा ने तप किया तब उनका शरीर दो भागों में बंट गया (1) पुरुषरूप (2) स्त्रीरूप – इसी स्त्री के अनेक नाम हैं, सरस्वती, शतरूपा, सावित्री, गायत्री, ब्रह्माणी इत्यादि। यही मूल प्रकृति है।

[illegible] पृ. 42

(ङ) ब्रह्मा के मुख – सावित्री जब ब्रह्मा की परिक्रमा करने लगी तब ब्रह्मा उसकी सुन्दरता पर प्रसन्न हो जिधर वह जाती घूम घूम कर देखने लगे अतः चारों दिशा के लिये चार मुख हो गये। इस पाप के फलस्वरूप ब्रह्मा को सारा तप-फल नष्ट हो गया – फिर एक पाँचवाँ मुख उत्पन्न हुआ (अ.-3)

(ग) मन्वन्तर - १४ मन्वन्तर होते हैं प्रत्येक
मन्वन्तर के अलग अलग मनु और
अलग अलग सप्तऋषि होते हैं (ए.
एक मनु का कार्यकाल ७१ दिव्य चतुर
युगों का होता है इस प्रकार १४×७१=
९९४ दिव्य युगों चतुर युगों की अवधि
पूर्ण होने पर फिर महाप्रलय होती है तब
सभी देवता एवं सब नष्ट हो जाते हैं फिर
नये क्रम से सारी बातें ज्यों की त्यों होती
रहती हैं। इस प्रकार यह क्रम अनवरत
चलता ही रहता है (अध्याय ८)। देवगण
प्रत्येक मन्वन्तर एवं प्रत्येक कल्प में उत्पन्न
और विलीन होते रहते हैं (ए. ६) प्रत्येक
मन्वन्तर के सप्तऋषि भी अपने मन्वन्तर में
धर्म की व्यवस्था करके अंत में परमपद
को चले जाते हैं (ए. ९)

Ref 'G' at 9 1934 M [illegible]

(घ) कश्यप-वंश - कश्यप की १३ पत्नियां थी
इनमें से अदिति से देवता हुए यानि सुर एवं
दिति से सारे असुर हिरण्याक्ष एवं हिरण्यकशिपु
आदि दैत्य हुए

1918

(७) दनु से कारण आदि दानव (असुर) पुलोमा * कालका से दानव। अन्य पत्नियों से पशु पक्षी इत्यादि (पृ: ८) फिर दिति से ४९ मरुत (पृ. ८)

(ज) कामदेव - ब्रह्मा के पुत्र हैं - ब्रह्मा ने शाप दी कि स्त्री या पुरुष का विचार करके तुम सर्वत्र सर्वदा उनके मन को क्षुब्ध किया करो किंतु जब ब्रह्मा के ही मन को सरस्वती के प्रति क्षुब्ध किया ~~कि शिव तुम्हें~~ तो उन्होंने शाप दिया कि शिव तुम्हें भस्म करेंगे (पृ. ९-१४)

(झ) यम - शिवजी के वरदान से लोकपाल, पितरों के अधिपति एवं धर्माधर्म के निर्णायक हुए (पृ: १७) कर्म के

(ञ) विश्वकर्मा - इन्होंने सूर्य का तेज कम करने के लिये सूर्य को खराद यंत्र पर बैठाकर उनकी ही स्त्री कृति से उनके तेज को काट छांटकर प्रसन्न कर (१) विष्णु का सुदर्शन चक्र (२) शिव का त्रिशूल (३) इन्द्र का वज्र का निर्माण किया (पृ. २१)

(ट) सती- दक्ष की पुत्री सती जगज्जननी हैं इनके १०८ नाम हैं एवं नाम और तत्सम्बन्धित तीर्थों के नाम अ. १३ में हैं।

(ठ) देवताओं के उचित या अनुचित कर्म शुभ या अशुभ फल देने वाले नहीं होते अतः मनुष्यों को उनके कर्मों पर विचार या अनुकरण नहीं करना चाहिये (अ. ६)

(ड) सर्प एक को ही डँसता है, शस्त्र एक ही का वध करता है किन्तु ब्राह्मण का क्रोध समस्त राष्ट्र, नगर परिवार का भी नाश कर सकता है (अ. ३०)

(ढ) अपनी स्त्रियों के प्रति, विवाह के समय प्राण संकट के समय तथा सर्वस्व को हरण से बचाने के लिये असत्य वचन दोषकारक नहीं (अ. ३

(ण) पत्नि के धन पर पति का, सेवक के धन पर स्वामी का और पुत्र के धन पर पिता का अधिकार होता है (अ. ३१)

192०

(ग) पिता की सम्पत्ति पर पुत्र का अधिकार

जो पिता के प्रतिकूल है वह सत्पुरुषों की सम्मति में दृष्टि से पुत्र नहीं माना गया है। जो माता पिता की आज्ञा मानता है, उनका हित चाहता है, उनके अनुकूल चलता है तथा माता पिता के प्रति पुत्रोचित बर्ताव करता है, वही वास्तव में पुत्र है एवं वही पिता के राज्य और धन पाने का अधिकारी है (अ. 34 श्लो. 15-25)
जो पुत्र गुणवान और सदा माता-पिता का हितैषी है, वह छोटा होने पर भी श्रेष्ठतम है। वही सम्पूर्ण कल्याण का भागी होने योग्य है (अ. 34 श्लो. 25-26)

(घ) जो विद्या और तपस्या में बड़ा होता है वही पूज्य होता है। (अ. 35 श्लो. 3)

(ङ) बुद्धि से प्रारब्ध ही बलवान है। सुख प्रारब्ध के अधीन है। (अ. 35 सुख और दुःख

1921।

दोनों ही अविस्मृत अनुगामी हैं। (पृ. ३८)
आपने पुराण कर्मों का बखान एवं कुछ ऐसे
निन्दनीय कार्य ध्वस्त करें। अग्निहोत्र, मौन,
अध्ययन और यज्ञ [struck through] से युक्त करते हैं
मान और ध्यान में स्थित रहो। ऐसे ही
सत्पुरुषों का आदर करते हैं (पृ. ३९)

(ख) जाम्बवान — युद्ध के बाद श्रीकृष्ण की स्तुति
करने के बाद वर मांगा "आपके चक्र-प्रहार से
मेरी मृत्यु हो एवं जाम्बवती आपको पति-रूप
में प्राप्त करे"। श्रीकृष्ण ने दोनों इच्छायें पूरी कीं।
(पृ. ४५)

(ग) भगवान शंकर द्वारा सृष्टि रचना — ब्रह्मा ने
त्रिशूलधारी शिव की रचना की। फिर विधाता ने
अपने मुख से ब्राह्मण, भुजाओं से क्षत्रिय, ऊरु से
वैश्य एवं पैरों से शूद्र की उत्पत्ति की। फिर क्रमशः
बिजली, वज्र, मेघ, इन्द्रधनुष। फिर जरा-मरण
रहित चौरासी करोड़ साध्यगणों को उत्पन्न किया।
तब ब्रह्मा ने उन्हें सृष्टि रचना से मना कर दिया।
कारण जरा-मरण रहित सृष्टि नहीं होनी। यह
शुभ और अशुभ से युक्त ही ठीक है। (पृ. ४)

1922

(प) भृगु द्वारा विष्णु को शाप — भृगु-पत्नि (शुक्राचार्य की मां) का मस्तक सुदर्शन-चक्र द्वारा काट डालने पर भृगु ने विष्णु को शाप दिया कि तुम सात बार मानव योनि में जन्म लोगे। (पृ: ४७- श्लो १०७)

(फ) हिरण्यकशिपु - एक अरब सात करोड़ बीस लाख अस्सी हजार वर्ष और बलि - दो करोड़ सतार हजार वर्ष राज्य किया। (पृ: ४७ श्लो: ५६)

(ब) वसुदेवजी - ब्रह्म के अंश कश्यप हैं। देवकी - पृथ्वी का अंश अदिति है। (पृ: ४५ श्लो: ५) कृष्ण के एक करोड़ एक लाख अस्सी हजार पुत्र थे (पृ ५० श्लो: २०) यादव तीन करोड़ थे (पृ: ५० श्लो: ४५)

(भ) दैव का विधान सबसे बलवान होता है (पृ: ५० श्लो: २९)

(म) ब्रह्मा, विष्णु, सूर्य और शिव इस जगत के मूल अधिपति हैं (पृ ५२ श्लो: २३)। शिव और सूर्य में कहीं भेद नहीं है (पृ: ५५ श्लो: २१)

(य) तेल और नमक भोजन में वर्जित है (पृ: ५५ श्लो: १७)

(र) चैत्र शुक्ल ३ को शिव और सती का विवाह हुआ था (पृ: ६० श्लो १५)

(ल) अक्षत द्वारा विष्णु का पूजन निषिद्ध है
सिर्फ वैसाख सुदि ३ को ही किया जा सकता है
अन्य दिनों में चावल की जगह सफेद तिल का
विधान है (पृ. ८५)

(व) जहाँ से गंगा का प्रादुर्भाव है वहीं से
यमुना भी निकली है। दोनों समान फल देने
वाली हैं। केवल ज्येष्ठ होने के कारण
गंगा पूजित है (पृ. १०५) हरिद्वार, प्रयाग
एवं गंगासागर संगम में विशेष हैं (पृ. १०६

(श) पृथ्वी, गौ, अग्नि, ब्राह्मण, शास्त्र, कांचन, जल
स्त्री, माता और पिता की निन्दा की अधोगति
होती है (पृ. १०५)

(स) सूर्य और चन्द्रमा की गति (पृ. १२४-१२५)

I सूर्य चलते हुए दिन में दीखते हैं किन्तु
वास्तविक सूर्य स्थिर ही है पृथ्वी ही अपनी
धुरी (Axis) पर घूमती (rotate) है चौबीस
घंटों में एक पूरा चक्कर लग जाता है जिससे
सूर्य के सामने वाले भाग में दिन और उसके
पिछले भाग में रात होती। पृथ्वी का प्रत्येक

1925

भाग (स्थल) दिन में सिर्फ एक ही बार
बार सीधा सूर्य के ठीक नीचे पड़ता है यानि
सूर्य सीधा ऊपर रहता है। पृथ्वी वृत्ताकार
(circular) गोल है अतः circle होने
की वजह से 360° तीन सौ साठ डिग्री बनती
है जिनमें 180° greenwich के पूरब और
180° पश्चिम longitude कहलाती है ये
कल्पित रेखा है। मत्स्य पुराण अ: १२४ श्लो:
८६ से ८८ तक वर्णन है दिन में पन्द्रह मुहूर्त
और रात में पन्द्रह मुहूर्त यानि दिन और
रात दोनों मिलाकर तीस मुहूर्तों में विभक्त
है। तीन तीन मुहूर्तों के हिसाब से दिन के पांच
भाग माने गये हैं। यथा सुर्योदय से लेकर क्रमश:
(1) प्रातः काल, (2) संगव काल (3) मध्याह्न काल
(4) अपराह्न काल (5) सायं काल। अब
आधुनिक गणना इस की कर रहा हूं:—

(A) $\frac{24 \text{ घंटे} \times 60 \text{ मिनट}}{360° \text{ long}} = \frac{24 \times 1}{6} = 4$ मिनट

यानि एक long से दूसरे long तक जाने

में चार मिनट लगती है यानि सु सूर्योदय

(सूर्यास्त) में चार मिनट का अंतर होता है।

(B) $\frac{२४ \text{ घंटे} \times ६० \text{ मिनट}}{३० \text{ मुहूर्त}} = २४ \times २ = ४८$ मिनट

यानि एक मुहूर्त ४८ मिनट का होता है।

∴ ३ मुहूर्त = ३ × ४८ मि = १४४ मिनट

यानि २ घंटे २४ मिनट। अतः उपरोक्त

प्रातः काल आदि पाँचों काल २ घंटे २४ मिनट

के होते हैं।*

*Contd to pg 1932 SN 168 & [illegible] at pg 1934

II इसके साथ ही साथ पृथ्वी सूर्य के चारों

ओर ORBIT पर परिक्रमा भी करती

रहती जिसके कारण सूर्य उत्तरायण और

दक्षिणायण कहलाते हैं दिन रात बड़े

छोटे होते हैं और ऋतु-परिवर्तन होता

रहता है। EQUINOX यानि २१ मार्च

और २३ Sep सितम्बर को सूर्य विषुवत

(equator) पर रहते हैं अतः इन दोनों

दिन दिन और रात एक समान यानि

बारह घंटों के रहते हैं।

1926

III इसी प्रकार चन्द्रमा की कलाएँ
के घटने बढ़ने की भी गणना है
12 घं. × 60 मिनट ÷ 15 मुहूर्त = 12×4 मिनट
= 48 मिनट प्रति शुक्ल पक्ष और
कृष्ण पक्ष में प्रत्येक दिन अड़तालीस
मिनटों का अंतर होता है। चन्द्रमा
27 दिन पर पृथ्वी की परिक्रमा करते
हैं। उपरोक्त गणनाधार पर गणना है जब
पक्ष पूरे पन्द्रह दिनों का हो तिथि घटने बढ़ने
की गणना भी इस पर आधारित होगी।

(प्र) भगवान शंकर ने पुष्पक विमान को हवा था
(79: 130 श्लोक)
Ref 51/हि 173 of 1934 हाल में ही, सत्य, युग में पौराणिक फल नहीं खाना
गुड़ के मुट्ठे नहीं खाना, शंकर के नाम हाथ जोड़ कर
चावल गाय पर मारा

श्रीमद् भागवत महापुराण — माहात्म्य में
(1254) "हरि शरणम्" = श्री हरि ही हमारे सर्वोपरि
आश्रय है

(भागवत पुराण स्कन्द श्लोक 48)

(१२६) <u>पाँच महापाप</u> — शराबपीना, ब्रह्महत्या, सुवर्ण की चोरी, गुरु-स्त्री-गमन, विश्वासघात। (मा. अ. ४ श्लो. १३)

(१२७) सकलों किन्तु धर्मों का छोड़ भगवत् भजन रूप धर्म को ही ग्रहण करो। (मा. अ. ४ श्लो. ८०)

(१२८) जो ध्यान से दूर नहीं होता वह नष्ट होता है प्रमाद से श्रवण का फल नष्ट हो जाता है मंत्र में सन्देह होने से वह सिद्ध नहीं होता व्यग्र चित्त से किया हुआ जप व्यर्थ होता है (मा. अ. ५ श्लो. ७३)

(१२९) सप्ताह यज्ञ की विधि अ. ६ में वर्णित है।

(१३०) वास्तव में श्रीमद् भागवत् पुराण गायत्री मय ही है (अ. ६ श्लो. ८१) इसे सुनने के दिन का नियम नहीं है सदा ही सुनना चाहिये (अ. ६ श्लो. ...)

~~२१/६/६४ श्रीमद् भागवत - महापुराण से संकलित~~

~~स्कन्ध १~~ (१३१) श्री कृष्ण के परमधाम पधारने के तीस वर्ष बाद परीक्षित को शुकदेव जी ने सुनाया। इसके दो सौ वर्ष बाद गोकर्ण जी ने सुनायी। इसके तीस वर्ष बाद सनकादि ने नारद को सुनायी (अ. ६ श्लो. ९६)

1928

श्रीमद् भागवत – महापुराण से संकलित —

प्रथम स्कन्ध

२९/५/८६ (१३२) जो हरि भजन करता है, भजन सिद्ध होने के पहले ही भजन छूट जाये या वह मर जाये तो भी उसका अमंगल नहीं हो सकता। (प्र.५ श्लो.१७)

(१३३) समस्त सत्कर्मों का एक मात्र सुन्दर फल हरि के गुण गान ही है (प्र.५ श्लो.२२)

(१३४) अपने समस्त कर्म प्रभु को अर्पित करना ही तापत्रय की औषधि है (प्र.५ श्लो.३२)

(१३५) वासनाएं पूर्णतया शान्त हुए बिना हरि के दर्शन दुर्लभ हैं (प्र.६ श्लो.२२)

(१३६) जीवों का परस्पर संयोग वियोग एक मात्र प्रभु ही करते हैं (प्र.१३ श्लो.४१)

(१३७) श्री हरि के निरन्तर स्मरण करने से सत्व-रज-तम रूप मल नष्ट होता है (प्र.१३ श्लो.५०)

(१३८) जिस दिन श्री कृष्ण ने अपने मानव-विग्रह से पृथ्वी को त्यागा उसी दिन पृथ्वी पर कलियुग आ गया (प्र.१५ श्लो.३६)

(१३९) <u>कलियुग के पाँच वास स्थान</u> :- (अ. १७ श्लो. ३८)
(१) जुआ - इससे असत्य बोलता है
(२) शराब - इससे मद होता है
(३) स्त्री संग - इससे आसक्ति होती है (काम)
(४) हिंसा - इससे निर्दयता होती है
(५) सोना - इससे बैर बढ़ता है।
(१४०) कलि में पुण्य कर्म मन के आते ही फल देते हैं किंतु पाप करने पर ही फल मिलता है (अ. १८ श्लो. ६)
(१४१) सन्त लोग समर्थ होते हुए भी बदला नहीं लेते (अ. १८ श्लो. ४८)
(१४२) महात्मा दुख या सुख देने वाले पर कुपित अथवा प्रसन्न नहीं होते (अ. १८ श्लो. ५०)

द्वितीय स्कन्ध
३०/५/८५
(१४३) अभय पद के इच्छुक को श्री हरि का ही श्रवण, कीर्तन और स्मरण करना चाहिये (अ. १ श्लो. ५)
(१४४) वैरागी और अभय पद के इच्छुक को भी हरि का नाम-संकीर्तन ही करना चाहिये (अ. १ श्लो. ११)
(१४५) अन्तकाल उपस्थित होने पर वैराग्य द्वारा अपने देह

1930

एवं कुटुम्बियों के मोह को काट डाले (अ० ५ श्लो० १५)
और प्रभु के नाम का स्मरण न छोड़े (अ० १ श्लो० ४०)
(१४६) भोग्य पदार्थों का उतना ही उपयोग करे जिससे
शरीर-यात्रा का निर्वाह हो, और उनमें भी ये
सुख के साधन नहीं हैं ऐसा निश्चय करके
अनासक्त रहे। (अ० २ श्लो० ३)
(१४७) जिससे श्री हरि में प्रेम हो वही धर्म श्रेष्ठ है (अ० ३ श्लो० २४)
(१४८) सर्वत्र, सदा और सब प्रकार हरि का ही श्रवण,
कीर्तन और स्मरण करना चाहिये (अ० २ श्लो० ३६)
(१४९) निष्काम पुरुष सिर्फ हरि को ही भजे (अ० ३ श्लो० १०)
(१५०) जब चित्त में द्रव होता है उस समय नेत्रों में
अश्रु-प्रवाह और शरीर में रोमांच होने वाला
है (अ० ३ श्लो० २४)
(१५१) प्रेमवश हरि के स्मरण से बाहरी निद्रा नहीं होती,
चित्त अशुद्ध विषयों में नहीं जाता एवं इन्द्रियां
असत् मार्ग में नहीं जाती (अ० ६ श्लो० ३३)
(१५२) जब तक प्रभु के दर्शन नहीं होता तभी तक कल्याण
के लिये परिश्रम करना पड़ता है (अ० ८ श्लो० २८)
(१५३) श्री हरि सदा ही सर्वत्र व्याप्त हैं (अ० ८ श्लो० ३५)

तृतीय स्कन्ध 2-5-84 (१५४) प्रद्युम्नजी-(रुक्मिणी-पुत्र) पूर्वजन्म में कामदेव थे (अ.१ श्लो २८)

(१५५) साम्बजी-(जाम्बवती पुत्र) पूर्वजन्म में पार्वतीजी के स्वामी कार्तिकेय के रूप में। (अ.१ श्लो ३०)

(१५६) मद — तीन प्रकार के हैं- विद्यामद, धनमद, कुटुम्बमद — तीनों का दमन करे (अ.१ श्लो ४३)

(१५७) महाभारत में अर्जुन द्वारा मारे गये वीर सब श्रीकृष्ण के श्रीमुख-दर्शन से उन्हीं के धाम प्राप्त किये (अ.२ श्लो २०)

(१५८) श्रीकृष्ण ब्रज में ग्यारह वर्ष तक रहे (अ.२ श्लो २६)

(१५९) उद्धवजी आठ वसुओं में एक थे और फिर इनका पुनर्जन्म नहीं हुआ - (अ.४ श्लो १२)

(१६०) विदुरजी — माण्डव्य ऋषि के शाप से भगवान यम ही मनुष्य रूप में विचित्रवीर्य की भोगपत्नि दासी के गर्भ से व्यास के ही पुत्र हैं (अ.५ श्लो २०)

(१६१) सेवा — सब धर्मों का मूल सेवा है इसके बिना धर्म सिद्ध नहीं हो सकता। सेवा धर्म सब धर्मों में महान है। श्री हरि भी सेवा से प्रसन्न होते हैं (अ.६ श्लो ३३)

(१६२) जिन श्री हरि के यश सुनने से सब क्लेश शान्त हो जाते उनके पद-सेवन का प्रेम मनुष्य के हृदय में प्रकट

होने पर सब दुःख लोगों के होंगे नहीं। (स्कं ८ श।१४)
(१९६३) श्री हरि स्वतन्त्र हैं जीव परतन्त्र है। (स्कं.८ श।१५)
(१९६४) जगत में जो अत्यन्त मूढ़ हैं और जो प्रभु को प्राप्त कर चुके हैं ये दोनों ही सुखी हैं। बीच वाले तो दुःख भोगते हैं (स्कं ८ श।१७)
(१९६५) ब्रह्माजी के चार मुख — प्रभु की नाभि कमल से उत्पन्न ब्रह्माजी को कुछ नहीं दीखा पर जब आकाश में नहीं और गर्दन मोड़ मोड़ कर देखने लगे इसलिये उनके चार मुख हो गये (स्कं ८ श।१८)
(१९६६) सर्व-भूत-दया — यानि सब प्राणियों पर दया करने से श्री हरि प्रसन्न होते हैं (स्कं ८ श।१२)
(१९६७) आज जैसा युग है ऐसा ही आगे भी रहेगा और इससे पूर्व भी ऐसा ही था (स्कं १० श।१३)
(१९६८) A मनुष्य के २४ घंटों के दिन-रात में आठ प्रहर (याम) होते हैं। १ याम (प्रहर) = तीन घंटे

Ref: 1925
Contd from Pg 1925

(B) मनुष्य के एक मास का पितृ देव का एक दिन-रात है (स्कं. ११ श।११)
(C) मनुष्य का एक वर्ष देवता का एक दिन-रात होता है (स्कं. ११ श।१२)

(D) देवता, पितर और मनुष्यों की आयु अपने अपने अनुमान से सौ वर्ष है (अ. ११ श्लो ६)

(E) देवताओं के बारह हजार वर्षों की एक चतुर्युगी होती है:—

सत्ययुग = ४८०० वर्ष (युग ४००० + संध्या ८००)

त्रेतायुग = ३६०० वर्ष (युग ३००० + संध्या ६००)

द्वापरयुग = २४०० वर्ष (युग २००० + संध्या ४००)

Ref [illegible] कलियुग = १२०० वर्ष (युग १००० + संध्या २००)

[कुल देवता १२००० वर्ष चतुर्युगी]

सत्ययुग के मनुष्यों में धर्म अपने चारों चरणों से युक्त रहता है, फिर अन्य युगों में अधर्म बढ़ने से उसका एक एक चरण क्षीण होता जाता है (अ. ११ श्लो २१)
प्रत्येक युग में जितने हजार वर्ष होते हैं उससे दुगुने सौ वर्ष उसकी संध्या के होते हैं (अ. ११ श्लो १९)

(F) महर्लोक से ब्रह्मलोक तक उपरोक्त १००० चतुर्युगी (see E above) का एक दिन और एक हजार चतुर्युगी की रात होती है जिसमें ब्रह्माजी शयन करते हैं (अ. ११ श्लो २२)

1934

Ref Pg 1917 (G) ब्रह्मा जी के उपरोक्त (vide F above) एक दिन में चौदह मनु हो जाते हैं (Ref Pg 1917 of this diary item (A))
∴ प्रत्येक मनु १००० ÷ १४ = ७१ चतुर्युगी की अवधि भोगते हैं (पृ: ११ श्लो: २४)

(१६९) वराह अवतार — भगवान ब्रह्माजी की नाक से एक अंगुष्ठ परिमाण का शूकर का बच्चा निकला जो एक क्षण में ही बढ़ कर हाथी के समान हो गया (पृ १३ श्लो १८) और समुद्र में प्रवेश कर पृथ्वी को निकाल लाये (श्लो १३ से ३१) और हिरण्याक्ष को मार डाला (श्लो ३२)

(१७०) जिसने श्री हरि की निष्काम आराधना की है वे ही बैकुंठ में भगवान का सारूप धारण कर रहते हैं (पृ १५ श्लो १४)

(१७१) श्री हरि तुलसी की सुगंध का ही अधिक मान करते हैं (पृ १५ श्लो १९)

(१७२) निरंतर श्री हरि का चिंतन करने वालों से यमराज दूर रहते हैं (पृ १५ श्लो २५)

(१७३) जूठे मुँह और अशुद्ध (बिना पैर हाथ धोये) सो जाने से उस पर भूत-पिशाच आक्रमण करते हैं (पृ २० श्लो ४१)
Ref Pg 1926 (6)

(१७४) दिति के गर्भ से कश्यप जी के दो यमज पुत्र हुए। ये दोनों पुरे सौ वर्ष गर्भ में रहे (३: १७: १२) हिरण्यकशिपु गर्भ में पहले स्थापित हुआ था और हिरण्याक्ष का जन्म पहले हुआ। यह आदि दैत्य यानि सबसे पहला दैत्य है (३: १७: १८)।

(१७५) जो भोग स्वयं आकर उपस्थित हो उसका निरादर करना अनुचित है (३: २२: १२)

(१७६) भगवान कपिल देव जी का अपनी जननी देवहूति को दिया गया ज्ञानोपदेश ३: २५ में है:—

(क) जो मन विषयों में आसक्त होता है वह बंधन का हेतु और जो परमात्मा में लगा रहता है वह मोक्ष प्रद होता है (३१५)

(ख) प्रभु-प्राप्ति के लिये भक्ति के समान और कोई मंगलमय मार्ग नहीं है (३१९)

(ग) संग ही बंधन का कारण है किन्तु साधुओं का संग मोक्षदाता है (३२०)

1936

(४९) श्री हरि की लीलाओं के सुनने और हृदय में धारण करने से श्रद्धा, रति और भक्ति का प्रादुर्भाव हो जाता है (३।२५) और फिर वैराग्य होने से प्रभु को प्राप्त करता है (२६)

(५०) जिसका एक मात्र प्रिय, आत्मा, पुत्र, मित्र, गुरु, सुहृद और इष्टदेव ~~एक~~ श्री हरि ही है वे बैकुंठ धाम में पहुँचकर लौटते नहीं हैं (३।३८)

(५१) ~~[illegible]~~ मन की सबसे बड़ी कल्याण ~~वाली~~ प्राप्ति यही है कि उसका चित्त तीव्र भक्ति योग द्वारा प्रभु में आसक्त होकर स्थिर हो जाय (३।४४)

(१८७) श्री हरि अपनी माया के द्वारा सब प्राणियों के भीतर जीव रूप से और बाहर काल रूप से व्याप्त हैं (३।२९।४५)

(१८८) सब प्राणियों में समभाव, वैर न करना, कुसंग को त्यागना, ब्रह्मचर्य, और मौन व्रत करो (३।२८) जो मिल जाय उसी में संतोष, मिताहार, एकान्त में रहना, शान्त स्वभाव, सबका बंधु, धैर्यवान करुणामय बनो (३।२८।२-८) — (Ref ३।२८ श्लोक २ से ७ तक)

193
19 37

(१७९) श्री हरि के स्वरूप के ध्यान का वर्णन अध्याय २८ में है।

(१८०) भक्तियोग का वर्णन अध्याय २९ में है।

(१८१) श्री हरि [illegible] बालक का रूप धारण कर (कल्पान्त में) पाँव का अँगूठा चूसते हुए अकेले ही वटवृक्ष के पत्ते पर शयन करते हैं। (अ ३३ श ४) / ([illegible] २२१)

[illegible] ३९१ [illegible] १५/६

~~(१८२) अत्रि पत्नि~~

चतुर्थ स्कन्ध 7/5/84

(१८२) अत्रि पत्नि अनसूया जी के ब्रह्मा जी के अंश से चन्द्रमा, विष्णु के अंश से दत्तात्रेय और शिवजी के अंश से दुर्वासा ऋषि हुए (अ १ श ३३)

(१८३) नर और नारायण ही क्रमशः अर्जुन और कृष्ण नाम से अवतरे (अ १ श ५९)

(१८४) ब्रह्मा विष्णु महेश तीनों ही जगदीश हैं (अ ७ श ३०)

(१८५) भगवान शंकर का वटवृक्ष — सौ योजन ऊँचा, सब ओर ७५ योजन लम्बी शाखाएँ, चारों ओर निश्चल छाया, कोई भी घोंसला नहीं, और न धूप (अ ६ श ३२)

1934

(१८६) शिव जी जग के स्वामी हैं अतः जग का कल्याण करने लिये विद्या, तप, समाधि करते हैं (४।६।४५)

(१८७) जिसकी भेदबुद्धि के कारण कर्मों में ही आसक्ति है, दूसरों की उन्नति देखकर जो कुढ़ा करते हैं, जो अपने दुर्वचनों से दूसरों का हृदय बेधते है वे विधाता से ही मारे गये होते हैं (४।६।४७)

(१८८) रुद्रगण श्री वीरभद्र द्वारा ध्वंस किये गये यज्ञ को। ब्रह्माजी द्वारा प्रार्थना करने पर शिव जी ने फिर से उद्धार किया - दक्ष को बकरे का सिर लगवाया, भृगु को बकरे की दाढ़ी-मूंछ लगवायी (४।७।३ से ५)

(१८९) श्री हरि नाम के कीर्तन से सबके सब विघ्न दूर हो जाते हैं (४।७।४७)

Ref. SN 265 of 1950

(१९०) अधर्म की पत्नि मृषा (असत्य) से दम्भ (पुत्र) माया (कन्या) के उत्पत्ति के द्वारा सम्बन्ध से लोभ और शठता हुई। फिर इनसे क्रोध और हिंसा। फिर इनसे कलह और दुरुक्ति। फिर इनसे भय और मृत्यु। फिर इनसे यातना और नरक उत्पन्न होते हैं। यानि इस प्रकार असत्य से सब होता है (४।८।२ से ४)

(१९१) दूसरों को दुःख देने वाला स्वयं ही उसका फल भोगता है (अ ८ श २८)

(१९२) अपने कर्मानुसार मान अपमान, दुःख सुख आदि भोगना पड़ता है (अ ८ श २९)

(१९३) अपने से अधिक गुणवान को देखकर प्रसन्न, समान गुणी से मित्रता और कम गुणी के प्रति दया करना चाहिये (अ ८ श ३४)

(१९४) ॐ नमो भगवते वासुदेवाय का सात रात्रि में जप करने से सिद्ध गणों को दर्शन होता है (अ ८ श ५३-५४)

(१९५) ध्रुव ने छत्तीस हजार वर्ष राज्य किया (९-२३)

(१९६) क्रोध नरक का द्वार है (अ ११ श ६)

(१९७) भक्त की इच्छित वस्तु श्री हरि उसे देते हैं दूसरी नहीं (अ १३ श ३४)

(१९८) कुपुत्र के कारण दुःखमय हो जाने पर पुरुष को वैराग्य हो जाता है (जो कल्याण का मार्ग है) (अ १३ श ४६)

(१९९) बुद्धिमान पुरुष भ्रमर के समान सब जगह से सार ग्रहण कर लेता है (अ १८ श २)

(२००) सर्व प्रथम पृथु ने ही भूमंडल पर पुर-गाँव आदि बसाये (अ १८ श ३२)

(१९५०)

(२०१) विधाता द्वारा बिगाड़े हुए काम को पूरा करने का हठ नहीं करना (अ१९ श्लो ३४)

(२०२) दुखसुख में समान रहने वाले को प्रभु सबसे अधिक सुलभ हैं (अ२० श्लो १६)

(२०३) राजा प्रजा को दंड देनेवाला, रक्षा करने वाला, उन्हें आजीविका देनेवाला और पृथक पृथक अपनी अपनी मर्यादाओं में रखने वाला होना चाहिये (अ२१ श्लो २५)

(२०४) कोई भी कर्म हो, मृत्यु के बाद उसे करने वाले, सिखाने वाले, अनुमोदन करने वाले को समान फल मिलता है (अ२८ श्लो २६)

(२०५) Ref ३३ २३ १९५३ नारद जी को शाप - भगवान की माया को पतिरूप में नारद ने स्वीकार नहीं किया तब उससे क्रोधित हो नारद को शाप दिया - तुम एक स्थान पर अधिक समय तक नहीं ठहर सकोगे (अ२७ श्लो २४)

(२०६) आधिदैविक, आधिभौतिक, और आध्यात्मिक में से किसी एक दुख से भी सर्वथा छुटकारा नहीं हो सकता (अ२९ श्लो ३२)

(२०७) वास्तव में कर्म वही है जिससे श्री हरि को संतुष्ट किया जाय और विद्या भी वही है जिससे श्री हरि में चित्त लगे। (४ २९ श्लो ४९)
श्री हरि के चरण-कमल ही मनुष्य के एकमात्र आश्रय-स्थान हैं (४ २९ श्लो ५०)

(२०८) सब कर्म श्री हरि को समर्पण करने एवं सदैव हरि कथा-वार्ता में रहने वालों का गृहस्थ में रहने पर भी बंधन नहीं होता। (४ ३० श्लो १९)

(२०९) श्री हरि का पूजन करने से सब का पूजन हो जाता है (४ ३१ श्लो १४)

पंचम स्कंध
13/5/84

(२१०) इन्द्रियों के वशीभूत मनुष्य को वन में भी भय रहता है (५ १ श्लो १७)

(२११) महापुरुषों की सेवा ही मुक्ति-द्वार एवं स्त्री-संगियों का संग ही नरक-द्वार है (५ ५ श्लो २)

(२१२) इस चंचल चित्त से मित्रता कभी न करे इस पर अपना अंकुश रख (५ ६ श्लो ३)

(१५५८)

(२५३) संसर्ग से होनेवाला दोष दूसरे में होनेपर भी सम्बन्ध रखनेवाले उनमें ही मुख्यतः है

(२५४) प्रारब्ध क्षय करने के लिये ही कष्ट आदि भोग लेना चाहिये (भा: १०।२।२८)

(२५५) विषयासक्त मन संसार संकट में डालनेवाला और विषयहीन होनेपर वही मन शीघ्र मोक्ष प्राप्त कराता है (५: ११।२७)

(२५६) श्री रामावतार सिर्फ राक्षसों को मारने के लिये ही नहीं हुआ, अपितु मनुष्यों को शिक्षा देने के लिये भी हुआ (५।१९।५)

(२५७) उत्तम कुल में जन्म, सुंदरता, वाकचातुरी, बुद्धि और आकृति इनमें से कोई भी गुण हरि को प्रसन्न करने का कारण नहीं है (इन गुणों से हीन वानर भालुओं से मित्रता करके भी इसको प्रतिपादित (पुष्ट) करता है (५।१९।७)

(२५८) भारतवर्ष में श्री हरि नर और नारायण के दो रूप धरकर कल्प के अन्त तक तपस्या कर रहे हैं (५।१९।९)

षष्ठ स्कंध (२१९) वर्तमान आदि अनन्त प्राणी - जीवों के जन्मों
16-5-84
के पाप-पुण्य का प्रदर्शक है (अ १ श्लो ४७)

(२२०) कोई भी कर्म किये बिना एक क्षण भी नहीं रह सकता। स्वाभाविक गुण बलात्कार उससे कर्म कराते हैं (अ १ श्लो ५३)

(२२१) श्री हरि के नाम कीर्तन गुणगान सब संकटों का प्रायश्चित हैं (अ २ श्लो ९-१०)

(२२२) विषयों का अनुभव किये बिना उनकी कटुता नहीं जानी जाती और कटुता का अनुभव होने पर जो वैराग्य होता है वही स्थायी है (अ ५ श्लो ४१)

(२२३) नारद को शाप - दक्ष ने शाप दिया "सम्पूर्ण
Ref SN 205 P. 9 1950 लोकों में तेरे ठहरने का कोई निश्चित स्थान न होगा" (अ ५ श्लो ४३)

(२२४) साधु वही है जो समर्थ होकर भी दूसरे के अपराध को सहन कर ले (अ ५ श्लो ४४)

(२२५) प्रयोजन सिद्धि के लिये अपने वैरियों की वंदना करने में भी आपत्ति नहीं (अ ७ श्लो ३३)

(२२६) नारायण-कवच (अ ८)

194५

(२२७) जो उत्पन्न हुआ है उसकी मृत्यु निश्चित है, इसे टालने का विधाता ने कोई उपाय नहीं रचा (५:१० श ३४)

(२२८) किसी को भी सदा जय ही प्राप्त नहीं होती वह कभी जीतता है तो कभी हारता भी है (५:१० श ८) (श ८)
वास्तव में तो भगवान ही प्राणियों के द्वारा प्राणियों की रचना करते हैं और प्राणियों के द्वारा प्राणियों का संहार करते हैं (५:१०:श १२)
जिस प्रकार काल की विपरीतता के कारण मृत्यु और अपयश प्राप्त होते हैं उसी प्रकार उसी की अनुकूलता से आयु लक्ष्मी तथा ऐश्वर्य आदि भी प्राप्त हो जाते हैं (५:१०:श १३)

(२२९) जीव के भिन्न भिन्न जन्मों में क्रमशः सभी सबके परस्पर बन्धु, मित्र, शत्रु, मध्यस्थ, मित्र, उदासीन और द्वेषी होते रहते हैं (५:१६ श ५)
इसकारण कोई प्रति प्रिय न अप्रिय ही है न अपना या पराया ही है (५:१६ श २०)

(२३०) विषयों की इच्छुक मनुष्य प्रभु को छोड़ कर अन्य की उपासना करते हैं किन्तु

इन उपार्स्य देवों का ह्रास होने पर उनके दिये हुए भोग भी नष्ट हो जाते हैं (स्क. १८/२/३८)

(२३१) सभी सुख की प्राप्ति और दुख की निवृत्ति के लिये प्रयत्न करते हैं पर उन कर्मों से न तो दुख दूर होता और न सुख ही मिलते हैं (स्क. ७/२/४२)

(२३२) देव गण मनुष्यों के लिये जो कुछ करते हैं वह उनके पूर्व कर्मों का ही फल होता है (स्क. १८/१/२८)

(२३३) पति-पत्नि में से किसी एक द्वारा किया हुआ धर्म दोनों को ही फल देता है (स्क. ७/१/३८)

सप्तम स्कन्ध 20/5/45 (२३४) नारद जी ने युधिष्ठिर से कहा :- बैर, भक्ति, भय, स्नेह अथवा कामना जिस किसी भी भाव से हो चित्त श्री हरि में इतनी दृढता से लगाना चाहिये कि श्री हरि से पृथक कुछ भी नहीं दीखे। मेरा तो निश्चित विचार है कि इन पाँचों में जितनी तन्मयता बैर के भाव से होती है भक्ति के द्वारा नहीं होती (स्क. ७/१/२५ २६)

1956

(२३५) श्री हरि के द्वारपाल जय और विजय
स्कं: ७ सनकादि के शाप से तीन जन्म में असुर
२७-५-५६ बने (1) हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष
(2) रावण और कुम्भकर्ण (3) शिशुपाल
और दन्तवक्त्र (अ: १ श्लो ४५) (अ १० श्लो ३८)

(२३६) जिसके कर्म में रक्षा की नहीं रक्षक है (अ ९ श्लो ३८)

(२३७) भगवान की दयादृष्टि से अनाथ और वन में रहने वाला भी चिरकाल तक जीवित रहता है और प्रतिकूल होने पर सुरक्षित रहने पर भी नहीं बच सकता (अ २ श्लो ४०)

(२३८) आत्मा नित्य है अतः यदि एक जन्म में सफलता न मिली तो अगले जन्मों में तो मिलेगी ही (अ ३ श्लो १९)

(२३९) नवधा भक्ति – श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद-सेवन, अर्चन, वन्दन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन (आत्मसमर्पण) (अ ५ श्लो २३)

(२४०) अपने हृदय में श्री हरि का भजन करे (अ ७ श्लो ३८)

(२४१) सकाम कर्म करने से सर्वदा दुःख ही उठाना पड़ता है इसकी अपेक्षा तो कामनावश कर्म (उपासना) न करना ही अच्छा है (अ ७ श्लो ४२)

1947

(२४२) श्री हरि में सर्वत्र उन्हीं का दर्शन करने रूप एकान्तिक भक्ति ही सर्वश्रेष्ठ है (७.७: ५४।५५ से ७ प्रसन्न्य ... भगवंत (मानस ४-३)

(२४३) अप्रसंयत कुमार्गी चित्त के सिवाय अन्य से द्वेष न कर ऐसे चित्त को समदर्शी बनाना ही श्री हरि की सबसे बड़ी उपासना है (अ८ श्लो १९)

(२४४) धन, कुलीनता, रूप, तप, विद्या, ओज, तेज, प्रभाव, बल, पौरुष, बुद्धि, योग से स्वामी पुरुष श्री हरि की आराधना के साधन नहीं हो सकते जितनी भक्ति होती है (७.९.९) प्रभु दुष्ट पुरुषों से पूजा की इच्छा नहीं रखते केवल करुणावश ही परिचर्या स्वीकार करते हैं (७.९ श्लो ११)

(२४५) जो सेवक श्री हरि से कामनापूर्ति की इच्छा रखता है वह सेवक नहीं कोरा व्यापारी है (७.१०.४)

(२४६) जिस समय मनुष्य अपने मन में स्थित कामनाओं को त्याग देता है उसी समय वह भगवत् भाव को प्राप्त हो जाता है (७.१० श्लो ८)

1948

(२४७) धनलोलुपों को सर्वत्र से देह का भय है। (पृ १३ श ३७)

(२४८) शरीर है निरन्तर अपने ऊपर से रहने के समान आचरण करे (पृ १८ श ४)

(२४९) मनुष्य का अधिकार उतने ही द्रव्य पर है जितने से पेट भरे (पृ १४ श ८)

(२५०) श्री हरि की पूजा से सभी जीवों की तृप्ति हो जाती है (पृ ११ श ३६)

(२५१) उद्योगहीन का निर्वाह उसकी निवृत्ति होकर होती है (पृ १५ श १७)

(२५२) मन जहाँ जहाँ भटके उसको वहाँ वहाँ से खींचकर लगाना (पृ १५ श ३३)

अष्टम स्कन्ध २६/५/८४

(२५३) गज और ग्राह का सरोवर में एक हजार वर्ष तक युद्ध हुआ। (पृ. २ श्लो. २९)

(२५४) ग्राह पूर्वजन्म में हूहू नाम का गन्धर्व था। गजेन्द्र पूर्वजन्म में पांड्य देश का राजा इन्द्रद्युम्न था अगस्त्य जी के शाप से गज हो गया था। (पृ. ४ श्लो. ३, ६, १०)

1949

(२५५) श्री हरि की आराधना से सब देवताओं की आराधना हो जाती है (८ ५ श ४८)

(२५६) कोई बड़ा काम सिद्ध करना हो तो शत्रुओं से भी मेल कर लेना चाहिये (८ : ६ श २०)

(२५७) कार्य जैसे शान्ति से सिद्ध होते हैं वैसे क्रोध से नहीं सिद्ध होते (८ : ६ श २४)

(२५८) दीनों की रक्षा करना प्रभुओं का कर्तव्य है (८ ७ श ३८)

(२५९) दूसरों के लिये दुःख उठाना प्रभु की उत्कृष्ट आराधना है (८ : ७ श ४४)

(२६०) श्री हरि की स्मृति सब विपत्तियों से मुक्त कर देती है (८ १० श ५५)

(२६१) श्री हरि की ही भक्ति अमोघ है और किसी देवता की नहीं (८ १६ श ६१)

(२६२) श्री वामन अवतार भादों शुक्ला १२ को हुआ (८ १८ श ५)

(२६३) ब्रह्माजी ने वामन भगवान के चरण अपने कमंडलु के जल से धोये वे ही गंगाजी हुईं (८ २१ श ४)

(२६४) समदर्शी होने पर भी प्रभु सब को उनकी भावनाओं के अनुसार फल देते हैं (८ : २३ श ८)

1950

(२६५) Ref S.N 189 ... 1938 श्री हरिनाम का कीर्तन सभी त्रुटियों को पूर्ण कर देता है (पृ २३ श १६)

(२६६) परब्रह्म श्री हरि के तीनों मनुष्य-तन में
Ref SN 286 Pg 1954 अवतार (वामन, राम, कृष्ण) कश्यप और अदिति (दक्ष कुमारी) के पुत्र रूप में ही हुए:—

(१) वामन — भागवत स्क॰ ८ अ॰ १८ श १५)

(२) श्री राम — कश्यप (दशरथ) अदिति (कौशल्या) — मानस बालकांड दो: १८६

(३) श्री कृष्ण — कश्यप (वसुदेव) अदिति (देवकी पृथ्वी का अंश) — मत्स्यपुराण (अ॰ ४६।२०)

नवम स्कंध 3-6-85 (२६७) मनु पुत्र नभग के पुत्र नाभाग के पुत्र महाराज अम्बरीष ने धन्व (मारवाड़) में अनेक अश्वमेध यज्ञ किये (अ॰ ४।२२)

(२६८) रेवती के पिता राजा कुकुद्मी रेवती के वर के विषय में पूछने ब्रह्मा जी के पास एक

द्वारा इनके रह गये - इस एक श्वास की अवधि
में पृथ्वी सत्ताईस चौकड़ी युग बीत गये।
(अ॰ ३ श्लो ३३) ब्रह्माजी के आदेशानुसार
रेवती का विवाह बलरामजी से कर दिया।
(२६९) श्रीहरि के दासों के लिये अन्य कुछ भी करना
शेष नहीं रह जाता (अ॰ ५ श्लो १६)
(२७०) मनु के छींकते समय नाक से इक्ष्वाकु पुत्र हुए
और इक्ष्वाकु के पुत्र निमि हुए (अ॰ ६ श्लो ४)
(२७१) मोक्ष के इच्छुक को दाम्पत्य धर्मी प्राणियों का
सहवास सर्वथा त्याग देना चाहिये (अ॰ ६ श्लो ५१)
(२७२) इक्ष्वाकु पुत्र निमि विना देह के ही देहधारियों के
नेत्रों में निवास करने का वर देवताओं से पा गये (इनके
देह का मन्थन करने पर उत्पन्न हुए कुमार का नाम
'जनक' / 'वैदेह' / 'मिथिल' हुआ / इसी ने मिथिला
पुरी बसायी (अ॰ १३ श्लो १३) - इसी वंश में आगे
चल कर 'सीरध्वज' हुए जिनकी हल के अग्रभाग
से श्री सीताजी प्रकट हुई थी (अ॰ १३ श्लो १८)। इनका
पुत्र 'कुशध्वज' थे (अ॰ १३ श्लो १९) (मानस बाल
कांड ३२५)

1952

(२५३) श्री हरि क्षमाशील हैं, पर शीघ्र प्रसन्न होते हैं (अ: १५ श्लो ४७)

(२५४) पुरुष को अपनी माता, बहिन और पुत्री के पास भी एकान्त में नहीं बैठना चाहिये (अ: १९ श्लो: १७)

(२५५) पृथा (कुंती) की छोटी बहिन श्रुतदेवा का पुत्र
Ref SN 235 at Pg 1946 दन्तवक्त्र पूर्व जन्म में दितिपुत्र हिरण्याक्ष था (अ: २४ श्लो: ३७) | कुंती की छोटी बहिन श्रुतश्रवा से शिशुपाल उत्पन्न हुआ | इस प्रकार दोनों ही श्री कृष्ण के दो बुआओं के पुत्र यानि भाई ही थे (अ: २४ श्लो: ४०)

(२५६) वसुदेव जी के रोहिणी, देवकी आदि कई
Ref. SN 283 at P 1953 स्त्रियाँ थी | देवकी से वसुदेव जी ने आठ पुत्र उत्पन्न किये जिनमें सातवें श्री संकर्षण जी (बलराम जी) और आठवें (अ: ३६ श्लो १७) श्री कृष्ण थे (अ २४ श्लो ५४-५५) | सुभद्रा (अभिमन्यु की जननी) भी देवकी की कन्या थी (अ २४ श्लो ५५)

दशमस्कंध ६८६

(२७७) श्री हरि की कथा-वार्ता गंगाजल की तरह (प्राणी) को पवित्र कर देती है (स्क १ श ३६)

(२७८) मृत्यु शरीर के साथ ही उत्पन्न होती है (स्क १ श ३८)

(२७९) मृत्यु के बाद मनुष्य देह पाने पर पूर्व शरीर को भूल जाता है (स्क १ श ४४)

(२८०) द्वेष करने वाले को ही दुःखों से भय होता है (स्क १ श ४६)

(२८१) मृत्यु को टालने की भरसक चेष्टा करे। उपस्थित मृत्यु टल जाती और टली हुई फिर उपस्थित हो जाती है। जीवन मृत्यु अदृष्ट के हाथ है अतः सर्वथा अचिन्तनीय है (स्क १ श ४८ से ५४)

(२८२) कंस जानता था कि मैं पूर्व जन्म में कालनेमि नामक महा दैत्य था और विष्णु के हाथ मारा जाकर यहाँ उत्पन्न हुआ हूँ (स्क १ श ६५)

(२८३) श्री हरि की आज्ञा से योगमाया ने देवकी के गर्भ से सातवें बालक को रोहिणी के गर्भ में स्थापित किया। उस समय रोहिणी गोकुल में नन्द जी के पास थी। इस प्रकार देवकी का सातवाँ गर्भ नष्ट हो गया समझा गया और संकर्षण / राम (बलराम) बलभद्र जी रोहिणी के पुत्र कहलाये (स्क २ श ८ से १५)

Ref. SW 276 at १।1952

1954

(२८४) श्रीकृष्ण को गर्भ में धारण करने के बाद देवकी के तेज को देखकर कंस मन में समझ गया कि मुझे मारनेवाला श्री हरि गर्भ में आ गया और उनके जन्मने पर मारने की प्रतीक्षा करने लगा। उठते, बैठते खाते पीते चलते फिरते हर समय वो श्री हरि की चिंता में रहने लगा, यहां तक कि उसे सम्पूर्ण जगत हरिमय दीखने लगा। (१०।२ श्लो. २३ से २४) (प्र. ४४ श्लो. ३८)

(२८५) श्री हरि त्रिलोकी की रक्षा के लिये सात्विक शुक्लवर्ण, उत्पत्ति के लिये रजः प्रधान रक्तवर्ण और संहार के लिये तमोमय कृष्णवर्ण धारण करते हैं (१०।३।२०)

(२८६) वसुदेवजी और देवकी के तीन जन्म :-

Ref SN 266 A 1950 (क) स्वायम्भुव मन्वन्तर में क्रमशः सुतपा नामक प्रजापति और पृश्नि नाम्नी थे - प्रभु पृश्निगर्भ नामक इनके पुत्र हुए

(ख) दूसरे जन्म में कश्यप और अदिति हुए प्रभु वामन

(ग) तीसरे जन्म में वसुदेव देवकी प्रभु श्री कृष्ण

(अ. ३ श्लो ३२ से ४३)

(२८७) योग माया भगवान विष्णु की छोटी बहन (१०।४।९)

(२८८) भिन्न-भिन्न प्रारब्ध वाले प्रियजनों का एक साथ रहना सम्भव नहीं है (१०।५।२५)

(२८९) पूतना के आने पर श्री कृष्ण ने अपनी आँखें बंद कर लीं कारण उनकी दृष्टि पड़ने से पूतना का माया-कुछ नष्ट हो जाने से प्रभु-लीला में बाधा पड़ जाती (१०।६।८)

(२९०) साधुजन अपनी समता के कारण सभी प्रकार के भय से बच जाते हैं (१०।७।३१)

(२९१) स्तन पान करते समय प्रभु ने अपने मुख में समस्त ब्रह्मांड का दर्शन कराया (१०।७।३५) एवं जब ग्वाल सखाओं ने शिकायत की कि कान्हा ने मिट्टी खायी है तब अपनी सफाई में मुख खोलने पर यशोदा को अपने मुख में समस्त ब्रह्मांड फिर दिखाये (१०।८।३७)

(२९२) पूर्व जन्म में नन्द जी वसु श्रेष्ठ द्रोण और यशोदा उनकी पत्नि 'धरा' थीं। ब्रह्मा जी का वरदान प्राप्त था। (१०।८।४८)

(२९३) प्रभु भक्तों के वश है और जिस सुगमता से भक्तों को प्राप्त होते हैं उतने अन्य किसी को भी नहीं। (१०।९।१९)

1956

(२४४) ऐश्वर्य के समय स्त्री, पुत्र और धन को ही
अनुकूलता समझता है (अ १० श्लो ८) दरिद्र परपीड़ा को
समझता है एवं अहंकार जनित उन्मत्तता से रहित
और सब मदों से रहित होता है और उसमें हिंसा
नहीं होती। उसे दैवयोग से जो कष्ट मिलता है
वही उसका परम तप है। समदर्शी साधुओं का भी
समागम भी दरिद्र को ही होता है। (अ १० श्लो १८ तक)

(२४५) अघासुर (अजगर) का ब्रह्मरन्ध्र फोड़ कर
उसकी ज्योति श्री कृष्ण के मुख में लीन हो
गयी (अ १२ श्लो ३३)। उस समय पांच वर्ष के थे (अ १२ श्लो ३७)

(२४६) श्री हरि की कोई और मनोहर लीला देखने की
लालसा से ब्रह्मा जी यमुना तट से सारे बछड़ों
और गोप बालकों को चुरा कर छिपा दिया तब श्री
कृष्ण ने प्रत्येक बछड़े और बालकों के
अनुसार रूप धारण कर किसी को एक वर्ष भर
इस घटना का पता ही नहीं चलने दिया (अ १३ श्लो २७)

(२४७) ज्ञान-प्राप्ति के प्रयास को छोड़ कर अपने स्थान
पर ही रहते हुए ही श्री हरि की कथा वार्ता सुनने
वाले श्री हरि को जीत लेते हैं। (अ १४ श्लो ३)

1957

(२९८) आपकी कृपा कब होगी इसकी उत्सुकता पूर्वक
प्रतीक्षा करते हुए प्रारब्ध-फल को भोगता
हुआ मन वाणी और शरीर से आपको प्रणाम
करता रहनेवाला मुक्ति का अधिकारी होता है (१०।१४।८)

(२९९) पाप का प्रायश्चित्त समझ कर ही श्री हरि
अपने शत्रुओं को दंड देते हैं और यह दंड देना
श्री हरि का उन पर अनुग्रह ही है (१०।१६ श्लो ३३)

(३००) देवगण गोकुल और वृन्दावन में गोप-
वेशों में अवतीर्ण हुए थे (१०।१८ श्लो ११)

(३०१) श्री हरि की सेवा करने से मनुष्य की आकृति
मनोहर हो जाती है (१०।२० श्लो १३) कष्टों को सहकर
होने पर भी भगवत्प्राप्त पुरुष चलायमान नहीं होते (श्लो १५)
कुटुम्ब में आसक्त मूढ अपनी नित्य क्षीण होनेवाली
आयु को नहीं जानते (श्लो ३७)

(३०२) चीर-हरणलीला का रहस्य १०।२२ की टिप्पणी
में वर्णित है

(३०३) श्री हरि का अंग-संग ही प्रीति का कारण नहीं
होता उनमें चित्त लगाने से ही बहुत शीघ्र श्री
हरि प्राप्त हो जाते हैं (१०।२३ श्लो ३३) (१०।२९ श्लो २७)

1958

(304) समान करके किये गये कर्म के फल के जैसा बिना समान के किये कार्य का फल नहीं होता (भा २४।३।१६)

(305) वैश्य की वार्ता वृत्ति चार प्रकार की है — कृषि, व्यापार, गो रक्षा और ब्याज लेना (भा १०।२४।२१)

(306) सात वर्ष के श्रीकृष्ण ने सात दिनों तक गोवर्धन पर्वत को एक हाथ पर उठाये रखा (भा: १०।२५।१९-२३ और भा: १०।२६।३)

(307) प्रभु जिस पर कृपा करते हैं उसे ऐश्वर्य भ्रष्ट कर देते हैं (भा: १०।२७।१६)

(308) गुण-श्रवण, दर्शन, ध्यान और नाम कीर्तन से प्रभु में जैसा प्रेम होता है वैसा पास रहने से नहीं होता। (भा १०।२९।२७)

(309) श्री हरि-कथा का प्रचार और श्रवण करने वाले ही सबसे अधिक दान करने वाले हैं (भा १०।३१।९) गोपीगीत

(310) श्री हरि के चरण आपत्ति में स्मरण करने के योग्य हैं (भा: १०।३१।१३) गोपीगीत

(311) अपने प्रेमी से प्रेम करने वाले स्वार्थी होते हैं, प्रेम न करने वालों से भी स्नेह करने वाले कृपालु और माता पिता के समान स्नेही होते हैं। जो प्रेम करने वाले और न करने वाले दोनों को ही नहीं भजते वे पूर्णकाम, आत्माराम, कृतघ्न या गुरुद्रोही होते हैं (भा १०।३२।१७ से १९ तक)

(३७२) प्रभु करुणामय हैं। अतः प्रभु को भजने वाले को भी प्रभु भजते हैं ताकि उसकी मनोवृत्ति प्रभु की ओर लगी रहे (१०: ३२ श्लो २०)

(३७३) शुभ-अशुभ कर्मों के भोग से पाप-पुण्य दोनों नाश हो जाते हैं तब जीव की मुक्ति हो जाती है

(३७४) चाहे किसी भी भाव से हो प्रभु श्री विग्रह का चिंतन से ही कल्याण हो जाता है। किस भाव के ही कल्याण-दान, भगवत् विग्रह का सहज दान है

(३७५) भगवान का एकमात्र धर्म है — प्रेम-परवशता, दया-परवशता, भक्तों की अभिलाषा-पूर्ति

(३७६) जरासंध कंस का ससुर और वानर-राज द्विविद कंस का मित्र था (१०।३६ श्लो ३५)

(३७७) समस्त उपासना मार्ग अंत में श्री हरि की प्राप्ति कराते हैं (१०।४० श्लो १०)

(३७८) जब पुरुष के संसार-बंधन का अंत होने को होता है तभी उसकी बुद्धि श्री हरि की भक्ति में लगती है (१०।४० श्लो २८)। समदर्शी होते हुए भी प्रभु भजने वाले को भजते हैं (१०।४१ श्लो ४७)

1960

(३१९) प्राणियों से द्रोह करने वाला शान्ति नहीं पा सकता (अ॰ ४८ श ४५) "चौदह भुवन एक पति होई। भूतद्रोह तिष्टइ नहिं सोई।।" (मानस सुं॰ कांड ३८)

(३२०) आजीवन सेवा करने पर भी मनुष्य माता पिता से उऋण नहीं हो सकता (अ ४५ श ५)

(३२१) समर्थ पुरुष माता पिता, वृद्ध, सती भार्या, बालक संतान, गुरु, ब्राह्मण और शरणागत का भरण पोषण अवश्य करे (अ ४५ श ७)

(३२२) संतान पर माता पिता की प्रीति अपने शरीर से भी अधिक होती है (अ ४५ श २१)

(३२३) श्री हरि के लिये अपने सारे लौकिक, परलौकिक धर्मों को जो छोड़ देते हैं उनका भरण पोषण श्री हरि स्वयं करते हैं (अ ४८ श ४)

(३२४) श्री कृष्ण ने समुद्र में जिस धनुष को तोड़ा वह २०० हाथ लम्बा था (अ ५६ श २५)

(३२५) श्री हरि के सिवाय वस्तु कहलाने योग्य कुछ नहीं है (अ ४६ श ४३)

* मोक्ष देने की सामर्थ्य में नहीं हैं। केवल भगवान विष्णु ही मोक्ष दे सकते हैं (अ पृ ४९ श २०) 1961

(३२६) संसार में किसी की आशा न करना ही परम सुख है (अ पृ ४८ श ४८)

(३२७) अज्ञानी भी श्री हरि का भजन करे तो श्री हरि उसका परम कल्याण करते हैं (अ पृ ४८ श ५९)

(३२८) जरासंध ने जब मथुरा को घेर लिया तब श्री कृष्ण और बलराम के सामने दिव्य शस्त्र सहित दो रथ आकाश से उतरे (अ पृ ५० श १२)

(३२९) तेईस तेईस अक्षौहिणी सेना लेकर १७ बार मथुरा पर आक्रमण किया, प्रत्येक बार हारकर भागा (अ पृ ५० श ४३)

(३३०) मुचुकुन्द इक्ष्वाकु वंशीय मान्धाता के पुत्र थे। इन्होंने दीर्घकाल तक असुरों से देवों की रक्षा की थी (अ पृ ५१ श १४)*

(३३१) श्री कृष्ण का अवतार अट्ठाईसवें द्वापर में हुआ है (अ: ५१ श ४५)

(३३२) रुक्मिणी जी लक्ष्मी जी की अंशावतार हैं (अ पृ ५२ श १५)

(३३३) संतों के पास कुछ भी नहीं होने पर भी शांत रहते हैं (अ पृ ५२ श ३२)

(३३४) श्री कृष्ण + रुक्मिणी से प्रद्युम्न पैदा हुए पूर्व जन्म में ये कामदेव थे (अ: पृ ५५ श १+२) / मायावती

1962

पूर्व जन्म का कामदेव की पत्नि 'रति' ही थी। (भा: ५५ श्लो ९)

(३३५) स्यमन्तक मणि प्रतिदिन आठ भार सोना देती थी (भा. ५६ श्लो ११)

(३३६) श्री कृष्ण और जाम्बवान का २८ दिन युद्ध हुआ।

(३३७) बलराम जी जब मिथिलापुरी में थे तो दुर्योधन ने उनसे गदा-युद्ध सीखा (भा ५७ श्लो २६)

(३३८) अग्निदेव ने अर्जुन को गाण्डीव धनुष, दो अक्षय तरकश, एक अभेद्य कवच दिया (भा ५८ श्लो २६)

(३३९) भौमासुर का सिर सुदर्शन चक्र से काट कर १६१०० राजकन्याओं को मुक्त किया। इन सबों ने श्री कृष्ण को वरण किया (भा ५९ श्लो ३३)

(३४०) प्रद्युम्न (रुक्मिणी के पुत्र) + रुक्मवती (रुक्मी की पुत्री) से अनिरुद्ध का जन्म हुआ (भा: ६१ श्लो १८)

(३४१) श्री कृष्ण की प्रत्येक रानी को दस-दस पुत्र और एक-एक कन्या हुई (भा: ६१ श्लोक १)

(३४२) रुक्मी ने अपने दौहित्र अनिरुद्ध को अपनी पौत्री रोचना ब्याह दी (भा: ६१ श्लो २५)। बलि के पुत्र बाणासुर की पुत्री 'उषा' ने अपनी सखी

[illegible] 1966

चित्रलेखा (योगिनी) के द्वारा अनिरुद्ध को
द्वारका से आकाश मार्ग द्वारा हर कर
मंगाया और बहुत दिनों तक इनका
समागम हुआ (पृ ६२ श २ से २६)।
इसी सिलसिले में यादवों और बाणासुर में
युद्ध हुआ। बाणासुर शिव जी भक्त था
अतः अपने भक्त की ओर से शिवजी ने
कृष्ण से युद्ध किया (पृ. ६३ श १२)

(343) जिसका संसार चक्र निवृत्त होने वाला होता है
उसी को श्री हरि के दर्शन होते हैं (पृ ६४ श २६)

(344) ब्राह्मणों का धन बड़ा ही दुर्जर है उसे थोड़ा सा
खाकर भी कोई नहीं पचा सकता (पृ ६४ श ३२)

(345) बलराम जी दो महीने गोकुल में रहे (पृ ६५ श १७)

(346) बलरामजी शेषावतार हैं (पृ ६८ श ३५)
(पृ: ६९ श ३६)

(347) जाम्बवती के पुत्र साम्ब का विवाह दुर्योधन की
पुत्री लक्ष्मणा से हुआ (पृ ६८ श १ और ५१)

(348) शिशुपाल का सिर प्रभु ने सुदर्शन चक्र से काटा
फिर उसका तेज प्रभु में समा गया (पृ ७४ श ४५)

1964

(३४९) युधिष्ठिर के ~~[illegible]~~ राजसूय यज्ञ में भीम पाकशाला देखे, दुर्योधन कोषाध्यक्ष, सहदेव अतिथि सत्कार, नकुल सामग्री एकत्र करने, अर्जुन महानुभावों की सेवा, श्रीकृष्ण अतिथियों के पाँव पखारने, द्रुपदी भोजन परोसती, कर्ण दान करते थे (पृ० ७५ व ३६५)

(३५०) दुर्योधन द्रौपदी से अपमानित था (पृ० ७५ व ३३)

(३५१) दन्तवक्र की ज्योति श्रीकृष्ण में लीन हो गई (पृ० ७८ व ७७)

(३५२) महाभारत युद्ध में कौरव/पांडव किसी का भी पक्ष लेने से बचने के उद्देश्य से तीर्थाटन के लिये चले गये (पृ० ७८ व १९७)

(३५३) एक बार सूर्यग्रहण के पर्व पर कुरुक्षेत्र में यादवों और गोपों का मिलन हुआ। जिसमें नन्द, यशोदा से श्रीकृष्ण मिले (पृ० ८२)

(३५४) भगवान ही जीवों का संयोग वियोग कराते हैं (पृ० ८२ व ८३)

(३५५) श्रीकृष्ण के विवाह (पृ० ८३) पटरानियाँ

रुक्मिणी — हरण कर के लिये गये।

सत्यभामा — प्रसन्न पिता ने अर्पित की

जाम्बवती — पिता जाम्बवान ने अर्पित किया

कालिन्दी — विष्णु को ही वरण के लिये तपस्या
करती हुई को पाकर विवाह कर लिये

मित्रविन्दा – युद्ध में जीत कर ब्याहा था।
सत्या – स्वयंवर की शर्त पूरी कर ब्याहा था।
भद्रा – पिता ने अर्पित किया
लक्ष्मणा – स्वयंवर में मत्स्य वेध कर प्राप्त किया

(३५६) समीपता अविश्वास का कारण होती है (१०।५८।३९)

(३५७) कल्याणकामी पुरुष को भगवान की लक्ष्मी
न दे कारण श्री मद से बहुधा हो जाता है (१०।६४

(३५८) देवकी के छः पुत्र जो कंस द्वारा मारे गये वे पूर्व
जन्म में मरीचि प्रजापति के छः पुत्र जो ब्रह्माजी के
शाप वश हिरण्यकशिपु के यहाँ जन्म लिया। फिर
देवकी के गर्भ में आये और कंस द्वारा मारे गये।
वहाँ से सुतल लोक में बलि के यहाँ गये। देवकी
के आग्रह करने पर श्रीकृष्ण और बलराम
बलि के यहाँ से लाकर देवकी को दिये। फिर
वे देवलोक चले गये (१०।८५।५६)

(३५९) मिथिला के राजा बहुलाश्व और मिथिलावासी विप्र
श्रुतदेव श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त थे अतः प्रभु एक ही
साथ अलग अलग दोनों के यहाँ गये (१०।८६।२६)

(३६०) श्री हरि का निरन्तर चिन्तन करना चाहिये
(१०।८७।५०)

1966

(३६१) प्रभु जिस पर कृपा करते हैं उसका सब धन धीरे
धीरे हर लेते हैं और उसके बंधु-बान्धव उसे छोड़ देते हैं।
फिर धन संग्रह में असमर्थ वह विरक्त हो भक्तों से
मेल करता है तब प्रभु कृपा करते हैं (स्क० ८८ श्लो ९)

(३६२) ब्रह्मा और शिव शीघ्र ही प्रसन्न हो वर देते एवं
उसी प्रकार शीघ्र ही कुपित हो शाप भी दे देते हैं
किन्तु श्री हरि ऐसे नहीं हैं। (स्क ८८ श्लो ९२)
श्री हरि शान्ति और प्रभाव के उद्गम स्थान हैं (स्क ८८ श्लो ९६)

(३६३) श्री कृष्ण और अर्जुन ऋषिवर नर और
देखें १६३८
वि १९३
नारायण हैं (स्क ८९ श्लो ६०)

(३६४) अनिरुद्ध को रोचना (रुक्मी की पोती) से वज्र
देखें ३५२ व
१९६२
नामक पुत्र हुआ - विप्र शाप के कारण मूसल
द्वारा यदुकुल का नाश हो जाने पर केवल
यह वज्र ही बच रहा था। (स्क ९० श्लो ३७)

(३६५) श्री हरि की आज्ञा से देवताओं ने यदुकुल में अवतार
लिया है (स्क ९० श्लो ४६)

ग्यारहवाँ स्कन्ध २६/६/८४ (३६६) जाम्बवती सुत साम्ब का स्त्री-वेष बनाकर यादवों ने द्वारका के निकट पिंडारक क्षेत्र में एकत्रित ऋषियों से पूछा इसको पुत्र या पुत्री का होगा। तब ऋषियों ने शाप दिया तुम्हारे कुल का नाश करनेवाला मूसल जनेगी (स्कं ११ अ १६)

(३६७) महात्मा पुरुषों का भक्तों का सत्संग भी बड़ा लाभकारी है (११:२ अ३०)

(३६८) अवतार (११ अ ४)
नर और नारायण - धर्म+मूर्ति के पुत्र (११:४)
हंसावतार, दत्तात्रेय, सनकादि, ऋषभदेव, हयग्रीव, मत्स्य, वराह, कूर्म, हरि।
नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध, कल्कि।

(३६९) भगवान का वर्ण और रूप (११:५)
सत्ययुग - शुक्ल वर्ण, चतुर्भुज
त्रेता - रक्त वर्ण, चतुर्भुज
द्वापर - श्याम वर्ण,
कलि - कृष्ण वर्ण

(३७०) श्री कृष्ण यादववंश में अवतीर्ण होकर १२५ वर्ष रहे (११ अ ६ श्लो २५)

1968

(३५१) श्री हरि की लीलाओं की चर्चा, सत्संग, कीर्तन से कल्याण होता (गरुड़ २।४९)

(३५२) धुन्धुकोपाख्यान – (प्र. ५, ६५६, ७४९.)

(३५३) पृथ्वी जैसी धैर्य; पर्वत वृक्ष जैसा परोपकार संचय न करना; चन्द्रमा की तरह शरीर घटता बढ़ता है आत्मा नहीं; सूर्य की तरह अनासक्ति; परिवार के पालन में ही फँसे न रहो; यथा लाभ संतोष; हानि-लाभ में समभाव; स्त्री-सेवा का त्याग; जीभ के स्वाद के वश न हो; आशा ही परम दुःख और इसका त्याग ही परम सुख है; एकान्त वास यानि अकेला ही विचरे; उत्पत्ति और नाश शरीर का धर्म है और निरन्तर कष्ट पाना ही इसका उत्तरोत्तर फल है।

(३५४) दुष्टों के अधीन गाँव, कुलटा स्त्री, पराधीन शरीर, असत सन्तान, पापमय धन, हरि गुन-गान से शून्य वाणी तो कष्ट दायक हैं। (गरुड़ २।८२।)

1969

(३७४) अपने सत्कर्म को किसी से न कहे (अ. ११।२।४७)

(३७५) अपनी सबसे प्रिय वस्तु भी प्रभु को अर्पित कर (अ ११।२।४१)

(३७६) हंसोपाख्यान (अ. १३)
सब संशय और अभिमान को त्याग कर श्री हरि का भजन करे (२।३८)

(३७७) निष्काम भक्ति भगवत्ता से हरि को प्राप्त कराती है (अ १४ श्लो २०) एवं भक्त को पवित्र करती है (श्लो. २४) हरि का स्मरण करने वाला श्री हरि में लीन हो जाता है (श्लो २७) स्त्री और स्त्री संगियों के सम्पर्क से क्लेश और बंधन होता है (श्लो ३०)

(३७८) अपने कुटुम्ब में ही आसक्त न रहकर भजन भी करे (अ. १७ श्लो ५२) घर में अतिथि के समान ममता और अहंकार से रहित होकर रहे, उनमें लिप्त न हो (श्लो ५४)

(३७९) श्री हरि की उपासना करना मनुष्य मात्र का धर्म है (अ १९ श्लो ४३)

(३८०) इस लोक के सुख का परलोक भी नाशवान है (अ १९ श्लो १८)

(३८१) भक्ति के परम साधन (अ १९ श्लो २० से २४)
कथा में श्रद्धा, निरन्तर नाम-कीर्तन, पूजा, स्तुतियों द्वारा स्तवन, प्रभु सेवा, प्रणाम, भक्तों

1970

की पूजा, सब प्राणियों में प्रभु को देखना,
हरि गुणगान, हरि चिंतन, निष्काम, आत्मसमर्पण
भूत-द्रोह का त्याग ही परम दान है, भोगों का त्याग
ही परम तप है, समदर्शिता ही परम सत्य है (११।३७)
हरि भक्ति प्राप्त होना ही परम लाभ है, दुष्कर्मों
से दूर रहना ही लज्जा है। (४०) असंतुष्ट ही
निर्धन है, अजितेन्द्रिय ही दीन है, अनासक्त ही
स्वाधीन है (४४)

(३८२) पिता को पुत्र के जन्म से और पुत्र को पिता
की मृत्यु से अपने अपने जन्म मरण का अनुमान
अनुमान करना चाहिये (११-२२ श्लो ४८)

(३८३) सात्विक कर्म से देव और ऋषि योनियों में, राजस
कर्म से असुर और मनुष्य योनियों में, और
तामस कर्म से भूत-प्रेत और तिर्यक योनियों
में जन्म होता है (अ २२ श्लो ५२)

(३८४) पदार्थ न रहने पर भी चिन्तन करते रहने से
संसार की निवृत्ति नहीं होती (अ २२ श्लो ५५)

(३८५) तिरस्कार, अपमान, हँसी, निंदा, मार, बाँधना,
आजीविका से अलग करना, ऊपर थूकना.

अपमान ऊपर मूत्र त्याग आदि से क्षोभित न हो। भागवत-भजन में लगे रहो। (११ २२ श्लो ५५-५८) (११ : २३ श्लो ५७)

(३८६) कृपण मनुष्य का धन सुख का साधन नहीं होता - जीवन में तो कमाने की चिन्ता से सन्तप्त रहता है और मरने पर नरक का कारण होता है (११ २३ श्लो १५)

(३८७) भूः = पृथिवी
भुवः = अन्तरिक्ष
स्वः = स्वर्ग (११ : २४ श्लो ११)

(३८८) सतोगुण — शम, दम, तितिक्षा, विवेक, तप, सत्य, दया, स्मृति, संतोष, त्याग, विषयों में अनिच्छा, श्रद्धा, लज्जा, दान, आदि आत्मरति।

रजोगुण — इच्छा, प्रयत्न, अभिमान, तृष्णा, गर्व, देवताओं से धन की याचना, भेदबुद्धि, विषयसुख, मदजनित उत्साह, अपनी प्रशंसा में प्रेम, हास्य, पुरुषार्थ, उद्योग।

तमोगुण — क्रोध, लोभ, झूठ, हिंसा, याचना, पाखंड, श्रम, कलह, शोक, मोह, विषाद, पीड़ा, निद्रा, आशा, भय, अनुद्योग
(११: २५ श्लो २-४)

1972

(३४९) भगवान की प्रतिमा आठ प्रकार की —
पत्थर, काठ, धातु, चन्दन, चित्र,
बालू की, मनोमयी और मणिमयी (स्कं ११ अ १२
पूर्वाभिमुख, उत्तराभिमुख अथवा स्थिर
प्रतिमा के सम्मुख बैठकर पूजन करे
(श्लो १९)
(३५०) अनुचित कर्म का करनेवाला, सहायक, प्रेरक
और अनुमोदक समान फल के भागी होते हैं
(श्लो ५५)
(३५१) किसी के स्वभाव की न प्रशंसा ही करे
और न निन्दा ही (११ २८ श्लो १)
(३५२) समुद्र तट पर बलरामजी ने योग द्वारा अपना
शरीर त्याग (श्री कृष्ण) ने पीपल वृक्ष के
छाया में बाँया चरण दाहिनी जाँघ पर रख
कर बैठे हुए थे तब जरा नामक व्याध ने
बाण से श्री चरण को बेध दिया (स्कं ३०
श्लो ३३)
फिर पहले अपने रथ, घोड़ों और आयुधों
को आकाश में भेज कर (अ ३१ श्लो ५) प्रभु
सशरीर अपने धाम में प्रवेश किया (श्लो ६)
प्रभु के साथ ही संसार से सत्य, धर्म,
धैर्य, कीर्ति और लक्ष्मी भी चली गयी (श्लो ७

दारुक से समाचार जान प्रभु विरह में देवकि रोहनी और वसुदेव जी ने प्राण त्याग दिये; बलराम जी की स्त्रियाँ, वसुदेव जी की स्त्रियाँ, रुक्मिणी आदि श्री कृष्ण की पटरानियाँ, श्री कृष्ण की पुत्रवधुओं ने अग्नि में प्रवेश किया (श. १८ और १९) प्रभु के मंदिर के सिवाय सारी द्वारिका पुरी को समुद्र ने एक क्षण में डुबो दिया (श २३)। बचे हुओं को लेकर हस्तिनापुर इन्द्रप्रस्थ आये और वहाँ अनिरुद्ध के पुत्र वज्र का राज्याभिषेक किया (श २५) पांडवगण पौत्र परीक्षित का अभिषेक कर महापथ पर चले गये (श २६)

द्वादश स्कन्ध 4-7-84

(३४३) कलि में धन ही कुलीनता, आचार और गुणों के उदय का कारण होगा और बल ही धर्म और न्याय की व्यवस्था का कारण होगा (श्लो २ व ३) घूस न देने पर न्याय में हार, वाणी की चपलता पांडित्य का चिन्ह होगी (श ४) निःसंकोच होकर बात करना ही सत्यता का चिन्ह होगी (श ६) आयु २०-३०

1974

की हँसी (शाल्व) कद छोटी होती (१।१२)

(३५४) कल्कि अवतार सम्भलपुर वासी ब्राह्मण "विष्णुयशा" के पुत्र रूप में होगा (१।३।२५)

Ref 168E at pg 1933

कलियुग श्री कृष्ण के परम धाम पधारते ही चालू हो गया था (१।१८।६ / १।१५।३६) कलियुग की आयु १२०० दिव्य वर्ष है (१२।२।३१)

(३५५) श्री हरि का गुणगान ही सारे अमंगलों का नाश करता है (१२।३।१५)

(३५६) कल्प = ब्रह्मा का एक दिन = एक सहस्त्र चतुर्युग = चौदह मनु की अवधि।

नैमित्तिक प्रलय = ब्रह्मा की एक रात (१२।४।२)

(३५७) मृत्यु का समय आने पर परीक्षित गंगा-तट पर उत्तराभिमुख बैठ गये (१।१९।१७)

(३५८) अमृत पान करने के कारण सर्प जन्म से ही अमर हैं (१२।६।२५)

(३५९) मार्कण्डेय जी (१२।८-९-१०) इन्होंने श्री हरि की माया का दर्शन करने की इच्छा प्रकट की (१२।९।६) कल्प काल के बाद प्रलय का दृश्य उपस्थित हुआ, एकार्णव हो गया। सर्वत्र समुद्र ने ढक लिया। उसमें एक पृथ्वी के एक टीले पर इनको

Ref SN 181 at pg 1937

1975

छोटा सा बट-वृक्ष देखा - उसके पत्ते पर एक
अति सुंदर बालक सोया हुआ देखा (१२।९।२०-२१)
जो अपने पैर को हाथ से मुख में लेकर
पैर का अंगूठा चूस रहा था (श्लो २५) उस बालक के
पास पहुंचते ही मार्कण्डेय उस बालक के
श्वांस के साथ उसके पेट में चले गये (श्लो २७)
वहां सारा विश्व देखा फिर बालक के श्वास
के बाहर निकल कर समुद्र में गिर पड़े (श्लो ३०)
इसके बाद बालक अंतर्धान हो गया (वट जल
में लीन हो गया और मार्कण्डेय जी अपने
स्थान में स्थित हो गये (श्लो ३४) कुछ समय के
बाद शिव जी ने उन्हें श्री हरि की भक्ति और अजर
अमर का वरदान दिया (१२।१० श्लो ३७) ये सात
बार श्री हरि के उदर में गये (१२।१० श्लो ४५)
(४००) वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध —
इन चार मूर्तियों से भगवान स्वयं स्थित है
(४०१) श्री हरि ही सूर्य हैं (१२।११ श्लो ३०) (१२।११ २१।२९)
(४०२) गिरते, ठोकर खाते, दुख से पीड़ित होते अथवा
छींकते हुए भी विवशता होकर 'हरये नमः'

1976

उच्चारण करने वाला भी सब पापों से मुक्त हो जाता है (पृ ५२ श ४८)

(४०३) श्री हरि की स्मृति अमंगल का नाश करती, शान्ति का विस्तार करती, चित्तशुद्धि, ईश्वर भक्ति प्राप्त कराती है (पृ ५२ श ५४)

(४०४) श्री मद्भागवत में पद पद पर कथाओं के प्रसंग में श्री हरि का ही वर्णन है (पृ ५२ श ६५)

(४०५) करम बचन मन छाड़ि छलु जब लगि जनु न तुम्हार।
तब लगि सुखु सपनेहुँ नहीं किएँ कोटि उपचार॥ (मानस २-१०७)

(४०६) सकल सुमंगल मूल जग रघुबर चरन सनेहु (मानस २-२०७)

(४०७) ७-७८५ सभी का सार यह है भाई।
सफल करु जनम हरि जस गाई॥

हरि शरणम् हरि स्मरणम् हरि चरणम्

हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवलम्।
कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा
(बृहन्नारदीय पु. ३८/१२६)

Pg ५१० करेंगे

7-2-84

उदार, दानी, प्रभु तुम कितने हो।
जुग जुग जनकर भिकते आये हो।।१

लख-अलख-बासी
दृष्टि-अदृष्ट-बासी, खम्भ तें प्रगट हो।
भगत पहलाद, कष्ट निवारे हो।।२

कश्यप अदिति पर अति प्रसन्न हो।
पूरि आस, जनम जनम सुत हो।।३

प्रगटे बामन बौनों बपु हो।
दसरथ-कौसिला घर राघव हो।।४

बसुदेव-देवकि सुत यादव हो।
जसुमत-नन्द-नन्दन कहलाए हो।।५

1978

ले दान, बलि द्वार प्रहरि भए हो।
जटायु अपने हित निज कर किए हो।।

सिय चोर रावन मुकुत किए हो।
घातक जरा स्वधाम दिये हो।।

गौपिन माखन चुरा, रुलाये हो।
नाचे इन्गित पर, हुलसाये हो।।

लिपट, सुदामा पद पखारे हो।
दो, पदाश्रय दान, संकट को।।

अकारण दयाल कहलाते हो।
फिर कृपाल क्यों कतराते हो।।

महादानि कृपण क्यों बनते हो।
रघुवर! विरद क्यों लजाते हो।।

(सं० ले० सं० ७०) 1975

15/7/86

श्री मद् भागवत - महापुराण

त्रिकालज्ञ भगवान व्यास देवजी ने कलि के मनुष्यों के कल्याण की कामना से प्रेरित हो प्रश्नोत्तरों के माध्यम से जन साधारण को परमार्थ पथ सरलता पूर्वक समझाने की भावना से प्रेरित हो श्री मद् भागवत महापुराण की रचना की

ग्रन्थ में सर्वप्रथम महात्म्य में इसकी सप्ताह - पारायण या सुनने का फल - श्री सर्व नारायण के श्री मुख से गोकर्ण ऋषि को सुनाया तदनुसार गोकर्णजी ने प्रेत - भाई धुन्धुकारी को सुनाकर उसे मोक्ष प्राप्त करायी।

श्री मद् भागवत में भगवान के सारे अवतारों का वर्णन है। श्री कृष्ण - चरित्र का विशद् वर्णन है।

१९८०

भगवान श्री कृष्ण के परमधाम पधारते ही पृथ्वि पर कलियुग प्रारम्भ हो गया। इसके तीस वर्ष बाद राजा परीक्षित को शुकदेव जी (व्यास-पुत्र) ने सुनायी; इसके दो सौ वर्ष बाद गोकर्ण ने सुनायी; इसके तीस वर्ष बाद सनकादि ने नारद को सुनायी।

महाभारत में माता के गर्भ से ही परीक्षित की रक्षा की थी - सभी जीवों की गर्भ में और गोद में रक्षा तो एक मात्र श्री हरि ही करते हैं। कलियुग के प्रधान नरेश परीक्षित ही है। कलि के प्रभाव से इन्होंने शमीक मुनि की ध्यानावस्था में ही उनके गले में मृतक सर्प डाल दिया जिससे क्रुद्ध हो मुनिपुत्र ने शाप दिया कि "आज के सातवें दिन परीक्षित तक्षक काटेगा"

परीक्षित ने जब इस शाप की बात सुनी तब ईश्वर की खोज में निकल पड़ा और व्यास-नन्दन श्री शुकदेव जी से श्रीमद्-भागवत महापुराण का सप्ताह-पारायण सुना। जैसे सुनता आत्मा भावरहित निलता जाता और सात दिनों में ही सद्गति प्राप्त कर ली।

परीक्षित श्री हरि को प्राप्त करने के लिये आतुर जीव है। जीव मरण धर्मा है और जन्म के साथ ही उसका मृत्यु-स्थल, मृत्यु-काल और मृत्यु-कारण निश्चित हो जाता है।

तक्षक (सर्पराज) है काल रूप है। अतः जब जनमेजय सर्पयज्ञ में तक्षक को अग्नि में गिराने के लिये आहुति दिलवाने चाहा तब प्रकट होकर देवगुरु बृहस्पति ने कहा कि यह तुम से मारा नहीं जा सकता यह अजर अमर है - काल भगवान तो सर्वदा रहेंगे ही। मृत्यु (काल) तो भगवान की सेविका है।

1982

सप्ताह में सातों वार (रवि, सोम, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि) हैं, मैं तो कहता हूँ सातों वार तो सदा सर्वदा आते ही रहते हैं। किसी भी प्राणी की मृत्यु काल में इन सातों में से कोई सा एक वार तो पड़ेगा ही पड़ेगा। इसी लिये सप्ताह-पारायण का विधान है।

श्री मद् भागवत पुराण श्री हरि का स्वरूप ही है। नौ स्कन्धों तक तो ग्रन्थ अवतारों का ऐतिहासिक वर्णन सा है। दशम स्कन्ध में योगेश्वर एवं लीला पुरुषोत्तम श्री कृष्ण चरित्र का विस्तृत वर्णन है। एकादश स्कन्ध में श्री कृष्ण को यदुवंश का नाश करवाकर स्वधाम गमन वर्णन है। द्वादश में परीक्षित का देह त्याग, सर्पसत्र, काल धर्म एवं मार्कण्डेय का वर्णन है। श्री भागवत गायत्री मय है, श्री हरि का विग्रह है।

श्री भागवत में भगवान के माधुर्य धर्म- यानि प्रेम-परवशता, कृपा-परवशता और भक्तों की अभिलाषा की पूर्ति- को विविध प्रसंगों द्वारा चित्रित किया गया है।

श्रवण, स्मरण, दर्शन और ध्यान से सान्निध्य की अपेक्षा अधिक प्रेम बढ़ता है। प्रभु में चित्त लगाने से उनकी प्राप्ति होती है। प्रभु अत्यन्त करुणामय हैं अतः प्रभु को भजने वालों को भी प्रभु नहीं भजते लेकिन उनकी मनोवृत्ति प्रभु की ओर लगी रहती है। *(K.01.1985 P..1)

अद्भुतकर्मा श्री कृष्ण की भगवत्ता एवं ऐश्वर्य सम्बन्धित प्रसंग भागवत में भरे पड़े हैं। इनके प्रगट होकर जन्म लेते ही चालू हो जाते हैं — तत्क्षण पैदा शिशु को कारागार से गोकुल ले जाते समय प्रहरियों की नींद लिया, वसुदेव जी की बेड़ियों का अपने आप खुल जाना